



INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

UPSC – CSE

(संघ लोक सेवा आयोग)

(हिंदी माध्यम)

प्रारंभिक और मुख्य परीक्षा हेतु



भाग - 14

नीतिशास्त्र + अभिरुचि एवं अभिक्षमता + केस अध्ययन + निबंध लेख

प्रस्तावना

प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स “UPSC-CSE (IAS/IPS/IFS) (हिंदी माध्यम)” को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा “सिविल सेवा परीक्षा (प्रारंभिक एवं मुख्य)” में पूर्ण संभव मदद करेंगे /

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं

प्रकाशक:

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : <http://www.infusionnotes.com>

WhatsApp कीलिए - <https://wa.link/6bx90g>

Online Order कीलिए - <https://shorturl.at/5gSVX>

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम

क्र. सं.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	नीतिशास्त्र का परिचय	1
2.	अच्छा, बुरा, सही, गलत, खुशी और आनंद (नैतिक अर्थ में प्रयुक्त)	4
3.	नैतिकता, नीति और कानून • कानून के बिना नैतिकता • नैतिकता के बिना कानून • कानून और नैतिकता • नीतिशास्त्र और कानून	8
4.	नैतिकता का दायरा • नीतिशास्त्र क्या नहीं है? • नीतिशास्त्र के अध्ययन के विभिन्न दृष्टिकोण • नीतिशास्त्र का विभाजन • नीतिशास्त्र और धर्म • नैतिकता का आधार के रूप में मानव स्वभाव • नैतिकता का आधार के रूप में भावनाएँ	10
5.	नैतिकता के अध्ययन का महत्व • नीतिशास्त्र, नैतिकता और मूल्य • नीतिशास्त्र और मूल्य : पश्चिमी बहसों और भारतीय संदर्भ • रामायण • भगवद् गीता • कौटिल्य का अर्थशास्त्र	16
6.	मानवीय क्रियाओं में नैतिकता	22
7.	नैतिकता के आयाम • वर्णनात्मक, मानक, परा, अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र • अहेन्स और हेडस्ट्रॉम : मूल्यों के दृष्टिकोणों की रूपरेखा	33
8.	मूल्य शिक्षा की कार्यप्रणाली	40
9.	मूल्यों को स्थापित करने में परिवार, समाज और शिक्षण संस्थानों की भूमिका	44
10.	राजा राम मोहन राय और ब्रह्म समाज की नैतिक शिक्षाएँ • जाति व्यवस्था को हटाना • सती प्रथा और बाल विवाह • विधवा विवाह • महिलाओं की शिक्षा और स्थिति	47

	• स्वामी दयानंद सरस्वती और आर्य समाज की नैतिक शिक्षाएँ • वैदिक साहित्य पर आधारित नैतिकता • विचार और दृष्टियाँ • स्वामी विवेकानंद के अनुसार नैतिकता • महात्मा गांधी के अनुसार नैतिकता • गीता के अनुसार नैतिकता	
11.	धार्मिक और दार्शनिक नैतिकता • दार्शनिक नीतिशास्त्र • सामाजिक और राजनीतिक नीतिशास्त्र • भारतीय विचारक • महात्मा गांधी, स्वामी दयानंद सरस्वती, स्वामी विवेकानंद, रवींद्रनाथ टैगोर, अरबिंदो घोष, लाल बहादुर शास्त्री, चंद्रशेखर आज़ाद, डॉ. राजेंद्र प्रसाद, राजा राममोहन राय, मौलाना अबुल कलाम आज़ाद	59
12.	मनोवृत्ति	83
13.	व्यवहार • मन और व्यवहार • दृष्टिकोण और व्यवहार • सामाजिक व्यवहार • सामाजिक प्रभाव और अनुनय • नैतिक और सुशासन • संघर्ष प्रबंधन	96
14.	नागरिक सेवा के लिए अभिरुचि और बुनियादी मूल्य • भारत में सिविल सेवाओं का विकास • सिविल सेवाओं में सुधार के लिए द्वितीय प्रशासनिक सुधार आयोग की सिफारिशें • नौकरशाही का राजनीतिकरण	105
15.	नौकरशाही की तटस्थता: एक मिथक • तटस्थता के लिए आचरण नियम • समर्पित नौकरशाही • नैतिकता और लोक सेवा मूल्यों को बढ़ावा देना • नोलन समिति के मूल्य सिद्धांत • ड्राइट वाल्डो के एक प्रशासक के 12 दायित्व • अभिरुचि • समग्र क्षमता : 4ई • लोकाचार, नैतिकता, दक्षता, समता	109
16.	निष्ठा / ईमानदारी	115

17.	निष्पक्षता / वस्तुनिष्ठता • वस्तुनिष्ठता • व्यक्तिपरकता • निष्पक्षता	120
18.	सहिष्णुता • अरस्तू का स्वर्णिम माध्य • सहिष्णुता के रूप • सहानुभूति और करुणा	126
19.	भावनात्मक बुद्धिमत्ता	129
20.	भारतीय और विश्व के नैतिक विचारक एवं दार्शनिक • भारतीय दर्शन ○ कौटिल्य, तिरुवल्लुवर, स्वामी विवेकानंद, गांधीजी, जवाहरलाल नेहरू • पश्चिमी दार्शनिक ○ सुकरात, प्लेटो, अरस्तू, एपिक्यूरस, मैकियावेली, थॉमस एक्विनास, थॉमस हॉब्स, रूसो, जॉन लॉक, जे. एस. मिल, इमैन्युअल कांट • भारतीय दर्शन के संप्रदाय ○ सांख्य दर्शन, योग दर्शन, न्याय दर्शन, वैशेषिक दर्शन, मीमांसा दर्शन, वेदांत दर्शन, रामायण और महाभारत, भगवद्गीता • कौटिल्य का अर्थशास्त्र • स्वामी विवेकानंद • गांधीजी • जवाहरलाल नेहरू • रवींद्रनाथ टैगोर • संत मदन टेंग्रे • आदि शंकराचार्य • अमर्त्य सेन • सर्वपल्ली राधाकृष्णन • पंडित जवाहरलाल नेहरू • वैशेषिक • डॉ. बी आर अम्बेडकर	147
21.	पश्चिमी दार्शनिक • सुकरात : पश्चिमी दर्शन के जनक • प्लेटो • अरस्तू • कार्ल मार्क्स	174

	• जॉन स्टुअर्ट मिल (नैतिक परोपकारिता) • जेरेमी बेंथम (नैतिक अहमवाद) • इमैन्युअल कांट • जॉन रॉल्स : सामाजिक न्याय सिद्धांत • थॉमस • जॉन लॉक • एपिक्यूरस • मैकियावेली • जीन-जैक्स रूसो	
22.	सार्वजनिक / सिविल सेवा मूल्य और लोक प्रशासन में नैतिकता • मैक्स वेबर का नौकरशाही का कानूनी-तर्कसंगतता मॉडल • नौकरशाही नैतिकता • नोलन समिति • जवाबदेही • जवाबदेही पर द्वितीय प्रशासनिक सुधार आयोग • लोक सेवा मूल्यों में स्थिति और समस्याएं	184
23.	नैतिक दुविधा को हल करने के दृष्टिकोण	204
24.	शासन में नैतिक एवं नैतिक मूल्य : सुशासन की आवश्यकता	208
25.	अंतरराष्ट्रीय नैतिकता का दर्शन • भारत का संविधान - अनुच्छेद 51 (राज्य नीति के निदेशक तत्व) • पंचशील • गुटनिरपेक्ष आंदोलन • गुजराल सिद्धांत • भारत की परमाणु नीति • शरणार्थी नीति	211
26.	कॉर्पोरेट गवर्नेंस	214
27.	निष्पक्षता • सार्वजनिक जीवन में सत्यनिष्ठा • शासन में सत्यनिष्ठा की आवश्यकता • लोक सेवा की अवधारणा • शासन में सत्यनिष्ठा • सूचना साझा करना और पारदर्शिता • आरटीआई अधिनियम, 2005 • केंद्रीय सूचना आयाक्त (CIC)	219
28.	आचार संहिता और नैतिकता संहिता • लोक सेवा विधेयक, 2006	232

	• नागरिक केंद्रित प्रशासन • नागरिक चार्टर	
29.	द्वितीय ARC की सिफारिशें	237
30.	CAG की भूमिका - वित्तीय जवाबदेही	244
31.	भ्रष्टाचार और उसकी चुनौतियाँ	245
32.	राजनीतिक और चुनावी सुधार • चुनाव और अन्य संबंधित कानून (संशोधन) अधिनियम, 2003 • राजनीतिक भ्रष्टाचार से लड़ने के लिए द्वितीय प्रशासनिक सुधार आयोग की सिफारिशें • आरटीआई अधिनियम, 2005 के तहत राजनीतिक दल	250
33.	न्यायिक सुधार - न्यायिक अखंडता बहाल करना	252
34.	भ्रष्टाचार से लड़ने के लिए कानूनी ढांचा, भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम, 1988 • बेनामी लेनदेन (निषेध) अधिनियम, 1988 और संशोधन अधिनियम 2016 • संस्थागत ढाँचा • सामाजिक अवसंरचना	254
35.	नैतिकता केस स्टडीज	257

निबंध लेखन

क्र. सं.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	निबंध लेखन :- एक अवलोकन • यूपीएससी परीक्षा में निबंध कैसे लिखें? • लिखते समय ध्यान रखने योग्य महत्वपूर्ण बातें • यूपीएससी मुख्य परीक्षा में निबंध का पेपर कैसे लिखें? • यूपीएससी निबंध विषय का चयन कैसे करें? • एक अच्छे निबंध की विशेषताएं • यूपीएससी निबंध प्रश्न पत्र में किन चीजों से बचें • निबंध लेखन के लिए महत्वपूर्ण बिंदु • विषय चयन • निबंध की तैयारी के लिए किन महत्वपूर्ण बातों का ध्यान रखना चाहिए?	325

	• यूपीएससी मुख्य परीक्षा के निबंध पेपर की तैयारी करते समय एक उम्मीदवार को किन विषय क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए? • यूपीएससी मुख्य परीक्षा से पिछले 25 वर्षों के विषय-वार निबंध प्रश्न (1994 - 2018) • यूपीएससी मुख्य परीक्षा निबंध पेपर • यूपीएससी मुख्य परीक्षा के लिए निबंध लेखन पर 7 आसान चरण • निबंध पाठ्यक्रम के मुख्य शब्द • निबंध लेखन पर कुछ सुझाव	
2.	विभिन्न विषयों पर महत्वपूर्ण निबंध • ड्रोन प्रौद्योगिकी • भारत में 5G प्रौद्योगिकी • राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 • कोरोनावायरस महामारी • स्वच्छ भारत अभियान • विश्व में जलवायु परिवर्तन • यूक्रेन: यूरोप और रूस के चौराहे पर संघर्ष • लॉकडाउन • महिला सशक्तिकरण • नोटबंदी • न्यायपालिका की भूमिका • आरक्षण विवाद फिर से जीवित या आरक्षण के पक्ष और विपक्ष में एक मामला • दहेज प्रथा या दहेज का अभिशाप • कृत्रिम बुद्धिमत्ता • भारत में गरीबी • मानव जाति के लिए श्री अरविंदो के योगदान • राष्ट्रीय युद्ध स्मारक • भारत में भूमि सुधार	349

अध्याय - 1

नीतिशास्त्र का परिचय

- नैतिक शिक्षाएँ प्राचीन काल से ही भारतीय शिक्षा प्रणाली का अभिन्न अंग रही हैं। हमारा प्राचीन साहित्य नीतिशास्त्र और नैतिकता के पाठों से भरा पड़ा है। नैतिक शिक्षा प्रदान करने की प्रक्रिया माँ की गोद में ही शुरू हो जाती थी क्योंकि वह पहले शिक्षक की भूमिका निभाती थी। अतीत में माता-पिता, सगे-संबंधी, सहकर्मी और पड़ोसी किसी व्यक्ति के समाजीकरण की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे, लेकिन पिछली आधी सदी के दौरान जीवन में तेजी से बदलाव आया है। **नीतिशास्त्र** मानव जीवन के लिए एक आवश्यकता है। यह सही कार्यवाई का निर्धारण करने का हमारा साधन है।
- अतीत में अधिकांश लोगों के लिए और आज भी कई लोगों के लिए, एक वस्तुनिष्ठ नैतिक मानक जो सभी लोगों पर हर समय के लिए बाध्यकारी है, मौजूद है। जबकि इस बात पर असहमति हो सकती है कि मानक क्या था, अधिकांश ने स्वीकार किया कि एक "**सही**" चुनाव था। लेकिन पिछली आधी सदी में, इस विचार में काफी कमी आई है कि कोई मानक मौजूद है या उसकी आवश्यकता भी है। कई लोगों के लिए, सही और गलत के बारे में निर्णय पूरी तरह से व्यक्तिगत और पूरी तरह से व्यक्तिपरक होते हैं: जो मेरे लिए सही है वह आपके लिए सही नहीं हो सकता है। ऐसी सोच का दावा है कि जो कुछ भी एक व्यक्ति नैतिक रूप से स्वीकार्य मानता है वह उस व्यक्ति के लिए स्वीकार्य है। यह आंकलन करना कि अक्सर अस्वीकार्य रूप से **असहिष्णु** माना जाता है और ऐसी यादृच्छिकता को अक्सर **उदारवाद** के नाम पर उचित ठहराया जाता है।
- 1960 के दशक** तक **व्यक्तियों के व्यवहार** के मानक के संदर्भ में एक शून्य की स्थिति विकसित हो गई थी। ईमानदार आत्म-नियमन के अभाव में भ्रष्टाचार और अन्य **सफेदपोश** अपराधों में भारी वृद्धि हुई। जैसे-जैसे सही और गलत के बीच का अंतर धुंधला होने लगा, समाज के साथ-साथ राज्य को भी विभिन्न गंभीर चुनौतियों का सामना करना पड़ा। ऐसे वातावरण में आम लोग सबसे ज्यादा पीड़ित होते हैं क्योंकि **अमीर और शक्तिशाली** अपने निहित स्वार्थों को पूरा करने के लिए दूसरों की कीमत पर अपने संसाधनों और अधिकार का **दुरुपयोग** करते हैं। ऐसी चुनौतियाँ सार्वत्रिक प्रकृति की रही हैं और भारत भी इसका अपवाद नहीं है। सही और गलत कार्यों, अच्छे और बुरे या सुदृढ़ और दुर्गुण की उचित समझ की कमी के कारण उत्पन्न ऐसे परिदृश्य को दूर करने के लिए, यह आवश्यक है कि नागरिकों को **नीतिशास्त्र और नैतिकता के सिद्धांतों** की शिक्षा दी जाए।
- सभी नागरिकों को उच्च नैतिक व्यवहार मानकों का पालन करना चाहिए, लेकिन यह सिविल सेवकों के लिए अनिवार्य है क्योंकि उनके कार्य पूरे राष्ट्र का भाग्य तय करते हैं।

- व्यक्ति नैतिक मूल्यों को समझने की क्षमता के साथ पैदा नहीं होते हैं; ये **मानव व्यवहार** के सीखे हुए पहलू हैं। जैसे-जैसे व्यक्ति परिपक्व होते हैं, उनकी **शारीरिक, भावनात्मक और संज्ञानात्मक क्षमताएं** विकसित होती हैं और वैसे ही नैतिक मुद्दों से निपटने की उनकी क्षमता भी विकसित होती है।
- अरस्तू** एक प्रारंभिक **यूनानी विचारक** जिन्होंने पश्चिम में नैतिक सोच के सबसे प्रभावशाली सिद्धांतों में से एक का प्रस्ताव दिया, ने तर्क दिया कि हमारी नैतिक क्षमताएं, जिन्हें उन्होंने सुदृढ़ या नैतिक रूप से अच्छी आदतें कहा, केवल निरंतर अभ्यास और दोहराव के माध्यम से विकसित होती हैं, उसी तरह, उन्होंने तर्क दिया, मनुष्य अपनी नैतिक क्षमताएं हासिल करते हैं और जब उन्हें उनके परिवारों और समुदायों द्वारा नैतिक रूप से उपयुक्त तरीकों से सोचने, महसूस करने और व्यवहार करने के लिए सिखाया और अभ्यस्त कराया जाता है। **साहस, उदारता, आत्म-नियंत्रण, संयम, सामाजिकता, शालीनता, निष्पक्षता या न्याय** जैसे महत्वपूर्ण मानवीय मूल्य, ये सभी सुदृढ़ हैं जिनकी उन्होंने चर्चा की और जिनका मानना था कि इस प्रकार के अभ्यास के माध्यम से प्राप्त किए जाते हैं। हालांकि ऐसे मूल्यों को विकसित करने के लिए किसी को अपना बहुत समय और प्रयास लगाना पड़ता है, एक बार जब वे हासिल कर लिए जाते हैं तो सदाचारी व्यवहार आसानी से और स्वाभाविक रूप से होता है।
- किसी के पास गलत को ना कहने का साहस और सत्य का सामना करने का **साहस** होना चाहिए। आपको बिना किसी डर या पक्षपात के सही काम करना चाहिए, सिर्फ इसलिए कि यह सही है। महत्वपूर्ण कार्य हैं, कार्य का फल नहीं। आपको सही काम करना होगा। यह आपकी शक्ति में नहीं हो सकता है, यह आपके समय में नहीं हो सकता है, कि कोई फल होगा। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि आप सही काम करना बंद कर दें। आप कभी नहीं जान सकते कि आपके कार्यों के क्या परिणाम होते हैं। लेकिन अगर आप गलत करते हैं या जो सही है उसके लिए खड़े नहीं होते हैं, तो ऐसे कार्य के परिणाम पूरे समाज और राष्ट्र के लिए घातक हो सकते हैं। किसी व्यक्ति को दिमाग से शिक्षित करना और नैतिकता से नहीं, समाज के लिए एक खतरा को शिक्षित करना है।
- विचार और कर्म के नेता एक नए जीवन की ओर अपना रास्ता टटोलते हैं, कभी **धुंधला, कभी स्पष्ट** रूप से यह समझते हुए कि भौतिक लाभ का जीवन, चाहे किसी राष्ट्र के लिए हो या किसी व्यक्ति के लिए, बहुत कम मूल्य का होता है, वास्तविक शक्ति उच्च आदर्शों के प्रति समर्पण से आती है जो मौलिक मानवीय गुणों को प्रतिष्ठित करते हैं। यह स्वीकार किया जाता है कि शासन हमारी समृद्धि और न्याय की खोज में **कमजोर** कड़ी है। **भ्रष्टाचार** का **उन्मूलन** न केवल एक नैतिक अनिवार्यता है बल्कि दुनिया के बाकी हिस्सों के साथ तालमेल बिठाने की आकांक्षा रखने वाले

राष्ट्र के लिए एक आर्थिक आवश्यकता भी है। गैर-अनुप्रयोग, अनुबंध प्रवर्तन और नौकरशाही देरी और भ्रष्टाचार में कमी के रूप में बेहतर शासन जीडीपी विकास दर को काफी बढ़ा सकता है। शासन गुणवत्ता के छह कथित उपाय, प्रत्येक कई उप-उपायों का एक समुच्चय, हैं: आवाज और जवाबदेही; राजनीतिक अस्थिरता और हिंसा की अनुपस्थिति; सरकारी प्रभावशीलता; नियामक बोझ की तर्कसंगतता; कानून का शासन; और स्थित की अनुपस्थिति। इनमें से, अंतिम दो नैतिक शासन के संदर्भ में सबसे सीधे महत्वपूर्ण हैं। हमारे जैसा एक लोकतांत्रिक गणराज्य सभी संभावित सामाजिक प्रयोगों का सबसे विशाल प्रतिनिधित्व करता है। ऐसे राज्य प्रणाली की सफलता व्यक्तिगत नागरिक की गुणवत्ता का सर्वोच्च महत्व है।

❖ नीतिशास्त्र और मानव अंतःक्रिया

परिचय

- व्युत्पत्ति के अनुसार "ethics" शब्द ग्रीक शब्द "ethos" से मेल खाता है जिसका अर्थ है चरित्र, आदत, रीति-रिवाज, व्यवहार के तरीके आदि। नीतिशास्त्र को "नैतिक दर्शन" भी कहा जाता है। "moral" शब्द लैटिन शब्द "mores" से आया है जिसका अर्थ है रीति-रिवाज, चरित्र, व्यवहार आदि। इस प्रकार नीतिशास्त्र को परम सुख की प्राप्ति के साधन के रूप में, मानव कार्यों के औचित्य या अनौचित्य के दृष्टिकोण से व्यवस्थित अध्ययन के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। यह मानव आचरण के उस भाग में अच्छे या बुरे का चिंतनशील अध्ययन है जिसके लिए मनुष्यों की कुछ व्यक्तिगत जिम्मेदारी होती है।
- सरल शब्दों में, नैतिकता का अर्थ है कि क्या अच्छा है और इसे कैसे प्राप्त किया जाए, और क्या बुरा है और इससे कैसे बचा जाए। यह संदर्भित करता है कि क्या अच्छा प्राप्त करने के लिए क्या किया जाना चाहिए और बुराई से बचने के लिए क्या नहीं किया जाना चाहिए। नैतिकता को अक्सर सभी विज्ञानों का फल कहा जाता है क्योंकि यह अंततः मानव व्यक्ति को पूर्ण करता है, अन्य सभी विज्ञानों और अन्य सभी चीजों को एक परम अंत के संबंध में व्यवस्थित करके जो बिल्कुल स्वतंत्र है।
- एक दार्शनिक अनुशासन के रूप में, नैतिकता उन मूल्यों और दिशानिर्देशों का अध्ययन है जिनके द्वारा हम जीते हैं। इसमें इन मूल्यों और दिशानिर्देशों का औचित्य भी शामिल है। यह केवल किसी परंपरा या रिवाज का पालन नहीं है। इसके बजाय, इसके लिए सार्वभौमिक सिद्धांतों के आलोक में इन दिशानिर्देशों के विश्लेषण और मूल्यांकन की आवश्यकता होती है। नैतिक दर्शन के रूप में, नैतिकता नैतिकता, नैतिक समस्याओं और नैतिक निर्णयों के बारे में दार्शनिक चिंतन है।
- मैकेन्ज़ी के अनुसार, नैतिकता आचरण में क्या अच्छा या सही है, इसका अध्ययन है।

- विलियम लिली के अनुसार, "नैतिकता समाजों में रहने वाले मनुष्यों के आचरण का एक मानक विज्ञान है जो इस आचरण को सही या गलत, अच्छा और बुरा मानता है।"
- नैतिकता नैतिकता का दार्शनिक अध्ययन है जो सही और गलत, अच्छे और बुरे आदि से संबंधित विश्वासों का समूह है। ये विश्वास हमारे व्यक्तिगत निर्णय और माने गए मूल्य या सिद्धांत हो सकते हैं जो हमारे कार्यों का मार्गदर्शन करते हैं, हमारे मूल्यों को परिभाषित करते हैं और हमें वे व्यक्ति होने के कारण बताते हैं जो हम हैं। नैतिकता उस शक्तिशाली प्रश्न को संबोधित करने का प्रयास करती है जिसे सुकरात ने वर्षों पहले तैयार किया था - हमें कैसे जीना चाहिए?
- क्या कार्यकारी मनमानी, निजी और सार्वजनिक जीवन में नैतिकता का संकट, लिंग-पक्षपाती कानून और प्रतिगामी सामाजिक-सांस्कृतिक प्रथाएं आपको चिंतित करती हैं? यदि ये प्रश्न आपको चिंतित करते हैं तो नैतिकता आपके लिए मायने रखती है क्योंकि ये नैतिक चिंताएं हैं। हालांकि नैतिकता अपरिहार्य और जीवन में महत्वपूर्ण है, फिर भी कोई आसान रास्ता खोज सकता है - नैतिक प्रश्नों पर तर्क के प्रति उदासीन होना। हालांकि यह दृष्टिकोण सरल और दर्द रहित लग सकता है, लेकिन इसकी कुछ कमियां हैं जो इस प्रकार हैं।
- व्यक्तिगत स्वतंत्रता को कमजोर करना: यदि आप सीधे स्वीकार करते हैं और कभी भी उन नैतिक मान्यताओं पर सवाल नहीं उठाते जो आपकी संस्कृति द्वारा आपको सौंपी गई हैं, तो वे मान्यताएँ वास्तव में आपकी नहीं हैं—और वे, आप नहीं, आपके जीवन में आपके द्वारा अपनाए गए मार्ग को नियंत्रित करती हैं। केवल तभी जब आप इन मान्यताओं की गंभीर रूप से जांच करते हैं और अपने लिए निर्णय लेते हैं—तभी आप वास्तविक अर्थ में स्वतंत्रता का आनंद ले सकते हैं।
- नैतिक दुविधाओं से निपटने में असमर्थता: बिना सवाल किए दृष्टिकोण इस संभावना को बढ़ाता है कि नैतिक दुविधाओं के प्रति आपकी प्रतिक्रियाएं अधूरी, भ्रामक या गलत होंगी। कभी-कभी वास्तविक जीवन में, नैतिक सिद्धांत एक दूसरे के साथ संघर्ष करते हैं। इन समस्याओं को हल करने के लिए मौजूदा नैतिक मान्यताओं का गंभीर रूप से मूल्यांकन करने के लिए एक नैतिक ढांचे की आवश्यकता होती है।
- बौद्धिक नैतिक विकास पर रोक: नैतिकता नहीं करना एक प्रकार के बौद्धिक ठहराव में बंद रहने जैसा है जहाँ नैतिकता में खोज और व्यक्तिगत नैतिक प्रगति मुश्किल से संभव है।
- अनैतिक जीवन जीने पर समाप्त हो सकता है: यदि कोई अंधाधुंध सामाजिक नैतिकता को अपनाता है, तो वह तर्कसंगत तर्क द्वारा अपने माने गए नैतिकता से प्राप्त अपने विश्वासों का बचाव करने में असमर्थ होगा। यदि अन्य लोग

तर्कसंगत तर्कों के आधार पर उसके विश्वासों का खंडन करते हैं तो वह खोया हुआ और भ्रमित महसूस करेगा। यह उसे सभी नैतिकता को नकारने और अंततः अनैतिक जीवन जीने के लिए मजबूर करेगा।

हमने नैतिकता और नैतिक तर्क के प्रति उदासीन रहने की कमियों को देखा है। अब, अवधारणा को बेहतर ढंग से समझने के लिए नैतिकता के स्वरूप को समझने का सही समय है। आइए नैतिकता की निम्नलिखित विशेषताओं के साथ समझते हैं;

- **नैतिकता के गुण (Attributes of Ethics):** इनमें से कुछ सार्वजनिक (अहिंसा का अभ्यास) हैं और कुछ प्रकृति में सापेक्षिक (विवाह में व्यभिचार)। यह किसी विशेष कार्य, पेशे या जिम्मेदारी के क्षेत्र के लिए विशिष्ट हो सकता है, उदाहरण के लिए, एक डॉक्टर की नैतिकता।
- **नैतिकता का पोषण (Cultivation of Ethics):** नैतिकता को अलगाव में नहीं पोषित किया जा सकता है, बल्कि सामाजिक आचार संहिता विकसित करने के लिए समाज की भागीदारी की आवश्यकता होती है। इसका उपयोग सामाजिक मूल्य के रूप में स्वीकार्य व्यवहार को बढ़ावा देने और ऊंचा करने के लिए किया जा रहा है और अस्वीकार्य व्यवहार को अस्वीकार और निंदा की जाती है। उदाहरण के लिए, प्रेमी जोड़ों को स्वतंत्र रूप से घूमने की अनुमति देना और वॉलेंटाइन् डे पर इन प्रेमी जोड़ों को पीटने के आचरण के लिए बजरंग दल की निंदा करना।
- **जिम्मेदारी की भावना (Sense of Responsibility):** नैतिकता को केवल किसी बाहरी एजेंसी के प्रति जवाबदेही द्वारा बनाए या कायम नहीं रखा जा सकता है, बल्कि भीतर की किसी चीज के प्रति भी। उदाहरण के लिए, सार्वजनिक जीवन में भ्रष्टाचार से केवल कानून का पालन करने वाले लोक सेवक बनकर ही नहीं निपटा जा सकता है (ईमानदारी और सत्यनिष्ठा का गुण), बल्कि इसके लिए भ्रष्ट गतिविधियों को उजागर करने के लिए दृढ़ प्रतिबद्धता की आवश्यकता होती है (सत्यनिष्ठा का गुण)।
- **परिवर्तनशीलता (Variability):** यह सांस्कृतिक और जातीय समूहों के बीच भिन्न हो सकता है (उदाहरण के लिए, मांसाहारी भोजन का सेवन), लेकिन राष्ट्रीय समुदायों के भीतर इस बात पर व्यापक सहमति होती है कि क्या सही है और क्या गलत। इस प्रकार, इसे विशेष समाजों में प्रचलित नैतिक मानकों के संदर्भ में सबसे अच्छी तरह समझा जाता है।

नैतिकता के स्वरूप के प्रश्न पर चर्चा हमें एक अन्य प्रश्न की ओर ले जाती है, अर्थात्, नैतिकता का विषय क्या है? नैतिकता अध्ययन के अन्य विषयों से कैसे संबंधित है? आइए समझते हैं कि नैतिकता का अन्य विज्ञानों से क्या संबंध है।

- **मानक विज्ञान बनाम सकारात्मक विज्ञान (Normative Science instead of Positive Science):** नैतिकता सकारात्मक विज्ञान से भिन्न है जो तथ्यों से संबंधित है और उनके कारणों द्वारा उनकी व्याख्या करता है, लेकिन नैतिकता मूल्यों से संबंधित है। यह उन मानकों या मानदंडों (मानक विज्ञान) का मूल्यांकन करता है जिनके द्वारा हम मानव क्रिया को सही या गलत ठहरा सकते हैं।
- **चरित्र का विज्ञान (Science of Character):** अंतर्ज्ञानवादियों (Intuitionists) के अनुसार, नैतिकता सही का विज्ञान है और इसका हर परिस्थिति में पालन किया जाना चाहिए। इस प्रकार, यह एक व्यक्ति के नैतिक चरित्र को इस अर्थ में दर्शाता है कि—नैतिक सिद्धांतों के आधार पर किसी व्यक्ति के आचरण में संगति मौजूद है या नहीं।
- **नैतिकता और व्यावहारिक विज्ञान (Ethics and Practical Science):** नैतिकता व्यावहारिक विज्ञान की तरह नहीं है जो किसी अंत को प्राप्त करने का एक साधन है। उदाहरण के लिए, चिकित्सा विज्ञान रोग के कारणों को दूर करने का एक साधन है, लेकिन नैतिकता यह देखने की कोशिश करती है कि जीवन का अंतिम लक्ष्य क्या है और इस लक्ष्य तक कैसे पहुंचा जा सकता है।
- **नैतिकता और कला (Ethics and Art):** कला परिणाम पर निर्भर करती है जबकि नैतिकता इरादे पर आधारित होती है। जैसा कि मैकेन्ज़ी ने वर्णन किया है, कला में अंतिम अपील प्राप्त कार्य के लिए होती है जबकि नैतिकता में अंतिम अपील आंतरिक सुझाव के लिए होती है। इसके अलावा, उनका तर्क है कि सद्गुण गतिविधि का तात्पर्य है, यानी, गुणी पुरुष वास्तव में नैतिकता का अभ्यास करते हैं, जबकि कला के मामले में कौशल का होना **वास्तविक गतिविधि** की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण है। उदाहरण के लिए, एक अच्छा चित्रकार वह है जो खूबसूरती से पेंट कर सकता है जबकि एक अच्छा आदमी वह नहीं है जो कर सकता है बल्कि वह है जो सही काम करता है।

अध्याय - 2

अच्छा, बुरा, सही, गलत, खुशी और आनंद (नैतिक अर्थ में प्रयुक्त)

यदि हम **सुखवाद** की परिभाषा के अनुसार चलें, तो जो कुछ भी मनुष्य अच्छा मानते हैं उसमें खुशी और आनंद शामिल होता है और जो कुछ भी वे बुरा मानते हैं उसमें दुख और दर्द शामिल होता है। लेकिन इसके लिए व्यापक व्याख्या (सरल इंद्रिय सुखों से बौद्धिक या आध्यात्मिक सुखों तक और संवेदी दर्द से गहरे भावनात्मक दुख तक) की आवश्यकता होती है, अन्यथा यह स्वीकार करना मुश्किल होगा कि जो कुछ भी अच्छा है उसमें कम से कम कुछ सुख या खुशी शामिल है और जो कुछ भी बुरा है उसमें कुछ दर्द या दुख शामिल है।

खुशी की प्राप्ति में शामिल एक तत्व यह है कि **अल्पकालिक दृष्टिकोण के बजाय दीर्घकालिक दृष्टिकोण** अपनाने की आवश्यकता है। लोग लंबी अवधि में कुछ सुख या खुशी प्राप्त करने के लिए कुछ दर्द या दुख से गुजर सकते हैं। उदाहरण के लिए, हम अपने दांतों और मसूड़ों को स्वस्थ रखने के लिए दांतों में छेद कराने के दर्द को सहन करेंगे ताकि हम खाने और सामान्य अच्छे स्वास्थ्य का आनंद ले सकें।

लेकिन कुछ ऐसे कार्य हैं जो किसी व्यक्ति को कुछ अच्छा लाएंगे लेकिन दूसरे को दर्द पहुंचाएंगे, जैसे कि एक परपीड़क (**sadistic**) का कार्य जो किसी अन्य मानव के साथ हिंसक दुर्यवहार करके आनंद प्राप्त करता है जिसे "दुर्भावनापूर्ण सुख" के तहत वर्गीकृत किया जा सकता है। आइए इन शब्दों से जुड़े कुछ प्रमुख अवधारणाओं को समझते हैं;

- **उत्कृष्टता:** विलियम फ्रेंकना (**William Frankena**) कहते हैं कि जो कुछ भी अच्छा है उसमें शायद "कुछ हद तक उत्कृष्टता" भी शामिल होगी। उत्कृष्टता सुख या संतुष्टि में एक महत्वपूर्ण वृद्धि है क्योंकि यह "अनुभवों या गतिविधियों को उनसे बेहतर बनाती है जो वे अन्य
- **था होती।"** उदाहरण के लिए, एक अच्छी फिल्म देखने से प्राप्त आनंद या संतुष्टि, काफी हद तक, इन घटनाओं के रचनाकारों और प्रस्तुतकर्ताओं की उत्कृष्टता के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है।

सामंजस्य और रचनात्मकता (**Harmony and Creativity**)

"अच्छे" और "सही" के दो अन्य गुण हैं - **सामंजस्य (Harmony) और रचनात्मकता (Creativity)**, जबकि "बुरे" और "गलत" की पहचान **असामंजस्य (Disharmony) और रचनात्मकता की कमी (Lack of Creativity)** से होती है। यदि कोई कार्य रचनात्मक होता है और अधिकतम संभव संख्या में मनुष्यों के बीच सामंजस्यपूर्ण एकीकरण लाने में मदद करता है, तो हम कह

सकते हैं कि यह एक सही कार्य है। इसके विपरीत, यदि किसी कार्य का प्रभाव नकारात्मक होता है, तो उसे गलत कार्य माना जा सकता है।

उदाहरण:

- अमेरिका की भूमिका **अब्राहम समझौते (Abraham Accords)** के माध्यम से **इजराइल और खाड़ी देशों के बीच सामंजस्य स्थापित करने** में रही है, जिससे एक सम्मानजनक और स्थायी शांति स्थापित हो सकती है (यह सही या अच्छा कार्य है)।
- दूसरी ओर, अमेरिका का **अफगानिस्तान से नाटो बलों को वापस लेने का निर्णय** तालिबान के उदय के साथ अस्थिरता का कारण बना (यह गलत और बुरा कार्य है)।

➤ कुछ संबंधित अवधारणाएँ (**Some Related Concepts**)

- **नैतिकता (Ethics)** यह निर्धारित करती है कि नैतिक दृष्टि से क्या अच्छा, बुरा, सही या गलत है।
- **सौंदर्यशास्त्र (Aesthetics)** कला और सुंदरता में मूल्यों के अध्ययन से संबंधित है, जो यह निर्धारित करता है कि कला में क्या अच्छा, बुरा, सही या गलत है और जीवन में सुंदर तथा असुंदर क्या होता है।

हालाँकि, इन दोनों क्षेत्रों में कुछ हद तक समानता हो सकती है।

उदाहरण:

- हम पाब्लो पिकासो की पेंटिंग **ग्वेर्निका (Guernica)** को कला की दृष्टि से देख सकते हैं और यह तय कर सकते हैं कि यह सुंदर है या कुरूप, और क्या यह कलात्मक तकनीक के आधार पर अच्छी या बुरी कला मानी जाएगी।
- साथ ही, हम इसके **नैतिक प्रभावों (Moral Import)** पर भी चर्चा कर सकते हैं। इस चित्र में पिकासो युद्ध की क्रूरता, अनैतिकता और मनुष्यों के बीच अमानवीयता पर नैतिक टिप्पणी करते हैं।

❖ **अनीतिक (Amoral) और अनैतिक (Non-Moral)**

➤ **अनीतिक (Amoral)**

अनीतिक का अर्थ है **कोई नैतिक समझ न होना** या सही और गलत के प्रति उदासीन रहना। कुछ लोग, जिनका **प्रीफ्रंटल लोबोटॉमी (prefrontal lobotomy)** हुआ होता है, ऑपरेशन के बाद अनीतिक रूप से कार्य करने लगते हैं (यानी उनमें सही और गलत की कोई समझ नहीं रहती)। इसके अलावा, कुछ मनुष्यों में नैतिक शिक्षा के बावजूद अनीतिक प्रवृत्तियाँ बनी रहती हैं या विकसित हो जाती हैं। ऐसे लोग अक्सर आपराधिक प्रवृत्ति के होते हैं, जो अपने अपराध को महसूस नहीं कर सकते और न ही अपने दुष्कृत्य के लिए कोई पछतावा या अफसोस होता है।

उदाहरण:

- ग्रेगोरी पॉवेल (Gregory Powell) - इस व्यक्ति ने जिमी ली स्मिथ (Jimmy Lee Smith) के साथ मिलकर बेकर्सफील्ड, कैलिफोर्निया के पास प्याज के खेत (The Onion Field) में एक पुलिसकर्मी की निःसंकोच हत्या कर दी। (जोसेफ वामबुगु की किताब The Onion Field में वर्णित)।
- कोलिन पिचफोर्क (Colin Pitchfork) - इस व्यक्ति ने इंग्लैंड में दो छोटी लड़कियों के साथ बलात्कार कर उनकी हत्या कर दी (The Blooding पुस्तक में वर्णित)।

➤ अनैतिक (Non-Moral)

अनैतिक उन वस्तुओं को संदर्भित करता है जो नैतिकता के प्रश्न से पूरी तरह परे होती हैं।

उदाहरण:

- निर्जीव वस्तुएँ जैसे कार और बंदूक न तो नैतिक होती हैं और न ही अनैतिक। हालाँकि, इन्हें चलाने वाला व्यक्ति उनका अनैतिक (Immoral) उपयोग कर सकता है, लेकिन स्वयं ये वस्तुएँ नैतिक रूप से तटस्थ (Non-Moral) होती हैं।

❖ नैतिकता बनाम नैतिक दर्शन (Morality vs Ethics)

- नैतिकता (Morality) किसी व्यक्ति के अपने सिद्धांतों और प्रतिबद्धताओं का समूह हो सकता है, भले ही अन्य लोग इसे अस्वीकार कर दें।
- नैतिक दर्शन (Ethics) का अकेले पालन नहीं किया जा सकता; यह व्यक्ति को आत्मबोध कराने के लिए दूसरों को भी साथ लाने की माँग करता है।

नैतिकता (Morality) को अकेले भी अपनाया जा सकता है, जबकि नैतिक दर्शन (Ethics) समाज के साथ जुड़कर कार्य करता है।

नैतिकता अन्य लोगों की सहमति की माँग नहीं करती, जबकि नैतिक दर्शन दूसरों को भी इसकी स्वीकार्यता के लिए प्रेरित करता है।

उदाहरण:

एक नैतिकतावादी (Moralist) कह सकता है - "मैं युद्ध में विश्वास नहीं रखता, तो क्या हुआ अगर पूरी दुनिया रखती है?" यानी, व्यक्ति नैतिक रूप से सही होने के लिए दूसरों की सहमति की आवश्यकता नहीं समझता।

➤ नैतिकता एक विज्ञान के रूप में (Ethics as a Science)

- नैतिकता एक विज्ञान है क्योंकि यह युक्तिसंगत सत्यों (reasoned truths) का एक व्यवस्थित समूह है, जो तार्किक क्रम में संगठित होता है और जिसका एक विशिष्ट वस्तु एवं औपचारिक उद्देश्य (Material and Formal Object) होता है। यह इस आधार पर मनुष्यों के आदर्श स्वरूप का विज्ञान है कि वे वास्तव में क्या हैं।

- यह एक तर्कसंगत विज्ञान (Rational Science) भी है क्योंकि इसके सिद्धांत मानव बुद्धि द्वारा उन वस्तुओं से निकाले जाते हैं, जो स्वतंत्र इच्छा (Free Will) से संबंधित होती हैं।

- इसके अंतिम लक्ष्य में वह कला भी शामिल है, जिसके द्वारा मनुष्य सही कारणों से एक सीधे-सादे या सुखद जीवन जी सकता है।

- यह एक नियामक (Normative /Regulative) विज्ञान है क्योंकि यह मानव जीवन को नियंत्रित और निर्देशित करता है तथा उनके अस्तित्व को सही दिशा प्रदान करता है।

➤ नैतिकता का सैद्धांतिक और व्यावहारिक पक्ष (Theoretical and Practical Aspects of Ethics)

- सैद्धांतिक (Theoretical) पक्ष - यह नैतिकता का वह भाग है, जो मौलिक सिद्धांत प्रदान करता है, जिनके आधार पर नैतिक निर्णय (Moral Judgments) लिए जाते हैं।

- व्यावहारिक (Practical) पक्ष - यह उस उद्देश्य (End) से संबंधित है, जिसे प्राप्त किया जाना है, और इसे प्राप्त करने के साधनों (Means) की व्याख्या करता है।

➤ नैतिकता बनाम नैतिकता दर्शन (Ethics vs Morality)

कुछ संदर्भों में नैतिकता (Ethics) और नैतिकता दर्शन (Morality) को अलग-अलग माना जाता है:

- नैतिकता (Ethics) - यह नैतिक आस्थाओं (Moral Beliefs) और प्रथाओं (Practices) पर एक स्पष्ट दार्शनिक विचार (Explicit Philosophical Reflection) करती है।

- नैतिकता दर्शन (Morality) - यह उन प्राथमिक मान्यताओं (First-Order Beliefs) और प्रथाओं को संदर्भित करता है, जिनके माध्यम से हम अपने आचरण का मार्गदर्शन करते हैं।

(उदाहरण: संगीत और संगीतशास्त्र (Music & Musicology) की तरह।)

हालाँकि, अधिकतर मामलों में दोनों को एक ही अर्थ में लिया जाता है।

- नैतिकता निश्चित रूप से नैतिक संहिताओं (Moral Codes) से संबंधित है, लेकिन इसे केवल नैतिक संहिता (Moral Code) तक सीमित नहीं किया जा सकता।

- इसका उद्देश्य केवल व्यवहार को प्रतिबंधित करना नहीं है, बल्कि यह अच्छाई क्या है और इसे कैसे प्राप्त किया जाए, यह खोजने में मदद करता है।

- नैतिक मानदंडों का अनिवार्य चरित्र नैतिक जाँच-पड़ताल (Ethical Inquiry) के उद्देश्य से उत्पन्न होता है - यानी, सबसे अंतिम व्याख्यात्मक सिद्धांतों (Ultimate Principles of Explanation) या सबसे मौलिक कारणों (Ultimate Reasons) की खोज करना कि किसी कार्य को करना क्यों आवश्यक है।

➤ नैतिकता और नैतिकता के स्रोत (Morality and Sources of Morality)

कौन नैतिक रूप से उत्तरदायी है?

- नैतिकता केवल मनुष्यों से संबंधित होती है, अन्य सभी चीजों पर चर्चा करना सिर्फ एक अनुमान मात्र है।
- यदि कोई अलौकिक सत्ता (जैसे ईश्वर) को नैतिकता से जोड़ना चाहता है, तो उसे श्रद्धा (Faith) के आधार पर ऐसा करना होगा।
- यदि कोई जानवरों या पौधों को उनके विनाशकारी कार्यों के लिए नैतिक रूप से उत्तरदायी ठहराना चाहता है, तो उसे उन वैज्ञानिक प्रमाणों की अनदेखी करनी होगी, जो इसके विपरीत संकेत देते हैं।
- हाल के शोधों में पाया गया है कि जानवरों को भाषा सिखाने के प्रयोगों से यह संकेत मिलता है कि वे कुछ हद तक मानव जैसे विचार विकसित करने में सक्षम हो सकते हैं।
- भविष्य में यह संभव हो सकता है कि जानवरों को भी नैतिकता सिखाई जाए, जैसा कि आज मनुष्यों को सिखाया जाता है।
- यदि ऐसा हुआ, तो जानवर भी अपने कार्यों के लिए नैतिक रूप से उत्तरदायी हो सकते हैं।
- लेकिन वर्तमान वैज्ञानिक प्रमाणों के अनुसार, जानवरों और पौधों को नैतिक (Moral) नहीं, बल्कि अ-नैतिक (Non-Moral) या अमानवीय (Amoral) वर्ग में रखा जाना चाहिए।

❖ नैतिकता के विभिन्न पहलू

1. धार्मिक नैतिकता (Religious Morality)

धार्मिक नैतिकता का आधार मनुष्यों और अलौकिक सत्ता (ईश्वर) के बीच का संबंध होता है।

- हिंदू परंपरा में, "स्वयंवर" (Swayamvar) को धार्मिक कर्तव्य माना जाता था, जिसमें स्त्रियों को अपना वर चुनने का अधिकार प्राप्त था।
- जो इस दिव्य कर्तव्य (Divine Duty) के नियमों का उल्लंघन करते थे, उन्हें मृत्यु के बाद ईश्वर के सामने उत्तर देना पड़ता था।

➤ महाभारत का उदाहरण (Example from Mahabharata)

- महाभारत में, भीष्म का काशी जनपद की राजकुमारियों को बलपूर्वक जीतकर अपने भाई के लिए ले आना आमतौर पर स्वयंवर के नियमों के उल्लंघन के रूप में देखा जाता है।
- इसलिए, उन्हें ईश्वर के प्रति उत्तरदायी माना जाता है।

2. नैतिकता और प्रकृति (Morality and Nature)

- यह मनुष्य और प्रकृति के बीच के संबंध को दर्शाता है, जो सभी आदिम संस्कृतियों में प्रचलित रहा है।

- हाल के समय में, पश्चिमी परंपरा भी इस बात से अवगत हो गई है कि प्रकृति के साथ नैतिक तरीके से व्यवहार करना आवश्यक है (उदाहरण: पर्यावरण नैतिकता / Environmental Ethics)।

- कुछ लोग प्रकृति को केवल मानव कल्याण के लिए मूल्यवान मानते हैं, लेकिन बहुत से लोग अब इसे स्वयं में एक मूल्यवान चीज मानते हैं, जिसे नैतिक विचार (Moral Consideration) दिया जाना चाहिए।

3. व्यक्तिगत नैतिकता (Individual Morality)

- यह नैतिकता व्यक्ति के अपने नैतिक संहिता (Code of Morality) से उत्पन्न होती है, जो किसी समाज या धर्म द्वारा मान्य हो भी सकती है और नहीं भी।
- यह "उच्च नैतिकता" (Higher Morality) को जन्म देती है, जो बाहरी दुनिया की अपेक्षा व्यक्ति के अपने अंतःकरण (Conscience) में निहित होती है।
- उदाहरण: दीवा (Diva) का मानना है कि गंधारन विवाह (Gandharan Vivah) यानी पूर्व-विवाहिक संबंध (Live-in Relationship) उसके नैतिक संहिता और अंतःकरण के अनुसार उचित है।

4. सामाजिक नैतिकता (Social Morality)

- यह नैतिकता समाज में मानव अंतर्क्रिया (Human Interaction) का परिणाम होती है।
- जब मनुष्य सामाजिक समूहों में एक साथ रहते हैं, तो संघर्ष की संभावना बढ़ जाती है यदि कोई सामाजिक आचार संहिता (Social Code of Conduct) न हो।
- यह आचार संहिता या तो दैवीय मूल (Divine Origin) की हो सकती है (उदाहरण: वेदों की चतुरंग व्यवस्था) या मनुष्यों द्वारा निर्मित (Man-Made) हो सकती है (उदाहरण: नैतिक आत्महितवाद / Ethical Egoism, परोपकारवाद / Altruism, या उपयोगितावाद / Utilitarianism)।
- उदाहरण: भारतीय समाज में सहनशीलता (Tolerance) और आपसी स्वीकृति (Mutual Acceptance) को सामाजिक नैतिकता के एक महत्वपूर्ण पहलू के रूप में देखा जा सकता है।

❖ नैतिकता के स्रोत (Source of Morality)

1. अलौकिक सिद्धांत (Supernatural Theory)

- इस दृष्टिकोण के अनुसार, नैतिक मूल्य किसी अलौकिक सत्ता या सिद्धांत से उत्पन्न होते हैं - जैसे:
- प्लेटो (Plato) के अनुसार "सर्वोच्च अच्छा" (The Good)
- यूनानी और रोमन धर्म में देवता (The Gods)
- यहूदी धर्म में यहोवा (Yahweh)
- ईसाई धर्म में ईश्वर और उनका पुत्र यीशु (God and His Son, Jesus)
- इस्लाम धर्म में अल्लाह (Allah)

अध्याय - 6

मानवीय क्रियाओं में नैतिकता (Ethics in Human Action)

नैतिकता (Ethics) का संबंध मानवीय क्रियाओं (Human Actions) और व्यवहार की नैतिकता (Morality of Human Behaviour) से है। लेकिन इन दोनों को पहले अलग-अलग समझना आवश्यक है।

- नैतिकता का संबंध केवल सोच-समझकर (Deliberate) किए गए कार्यों से होता है, न कि अज्ञानता या अनजाने में किए गए कार्यों से।
- संत थॉमस एक्विनास (St. Thomas Aquinas) ने Summa Theologica में मानवीय क्रियाओं के तीन महत्वपूर्ण तत्वों पर चर्चा की, जो निम्नलिखित हैं -

1. ज्ञान की भागीदारी (Involvement of Knowledge) - यह एक अनिवार्य आवश्यकता है क्योंकि जब तक हमें किसी चीज़ का ज्ञान नहीं होगा, हम उसे करने का निर्णय नहीं ले सकते।

2. स्वेच्छा (Voluntariness)

- कोई भी कार्य तब ही नैतिक रूप से मानवीय कहा जाएगा जब वह **इच्छा (Will)** से किया गया हो।
- इच्छा ही हमारे बाहरी कार्यों को नियंत्रित करती है और हमारे कार्यों का मूल कारण होती है।
- **उदाहरण -** यदि कोई व्यक्ति मेरे हाथ में बंदूक रखकर ट्रिगर दबा देता है, तो यह स्पष्ट है कि इस कार्य को करने की इच्छा मेरी नहीं थी। इसलिए यह कार्य स्वेच्छा से (Voluntary) नहीं हुआ और इसे मानवीय क्रिया नहीं माना जाएगा।

3. स्वतंत्र इच्छा (Free Will)

- **मनुष्यों में स्वतंत्र इच्छा (Free Will) होती है,** जिसका अर्थ है कि वे किसी कार्य को करने या न करने की क्षमता रखते हैं।
- यह स्वतंत्र इच्छा मनुष्यों को विकल्प (Choices) प्रदान करती है।
- इसका अर्थ यह हुआ कि नैतिकता केवल उन्हीं कार्यों पर लागू होती है, जो स्वतंत्र रूप से चुने गए हों।
- यदि इनमें से कोई भी तत्व अनुपस्थित हो, तो उसे मानवीय क्रिया नहीं कहा जा सकता।
- कुछ कार्य स्वेच्छा से (Voluntary) किए जाते हैं, लेकिन स्वतंत्र इच्छा (Free Will) की अनुपस्थिति के कारण वे नैतिक रूप से मानवीय क्रियाएं नहीं होतीं।
- **उदाहरण - भारत में वैवाहिक बलात्कार (Marital Rape)** एक कड़वी सच्चाई है।
- परंपरागत वैवाहिक जिम्मेदारियों (Traditional Marriage Obligations) और कानूनी समाधान (Legal Remedies)

की अनुपस्थिति महिलाओं को इस स्थिति में रहने के लिए मजबूर कर रही है।

- इस स्थिति में यौन संबंध बनाना (जो अंततः वैवाहिक बलात्कार में बदल जाता है), भले ही यह स्वैच्छिक (Voluntary) लगे, लेकिन स्वतंत्र इच्छा (Free Will) के अभाव में इसे मानवीय क्रिया नहीं कहा जा सकता।

❖ मानवीय क्रियाओं में बाधाएं

- ऊपर बताए गए तीन तत्वों के अतिरिक्त, कई अन्य कारक भी हैं जो किसी कार्य को "अमानवीय" बना देते हैं, जिससे वे नैतिक जांच (Ethical Scrutiny) के दायरे में नहीं आते।
- संत थॉमस एक्विनास (St. Thomas Aquinas) ने इनमें से कुछ बाधाओं का उल्लेख किया है -

1. अज्ञानता (Ignorance)

- जब कोई व्यक्ति, जो ज्ञान प्राप्त करने में सक्षम है, किसी विषय में जानकारी नहीं रखता, तो इसे अज्ञानता कहा जाता है।
- जानवरों को अज्ञानी नहीं कहा जा सकता क्योंकि उनके पास मानवीय ज्ञान (Human Knowledge) प्राप्त करने की क्षमता नहीं होती।
- लेकिन यदि कोई सिविल सेवक (Civil Servant) सिविल सेवा के आचार संहिता (Code of Conduct) से अनजान है, तो इसे अज्ञानता माना जाएगा।

2. भावनाएं (Passion)

- **भावनाएं (Passions)** शक्तिशाली मनोभाव (Emotions) होते हैं, जो किसी चीज़ को अच्छा या बुरा मानने से उत्पन्न होते हैं।
- यदि कोई भावना सोच-समझकर (Deliberately) नहीं जगाई गई हो, तो यह इच्छाशक्ति (Will) को कार्य करने के लिए प्रेरित कर सकती है, लेकिन साथ ही स्वतंत्र इच्छा (Free Will) को कमजोर भी कर देती है।
- यदि कोई कार्य पूरी तरह से भावनाओं के प्रभाव में किया जाता है, तो इसे पूर्ण रूप से स्वतंत्र इच्छा से किया गया कार्य नहीं कहा जा सकता।
- फिर भी, यदि स्वतंत्र इच्छा किसी हद तक मौजूद है, तो वह कार्य अभी भी मानवीय क्रिया माना जाएगा।
- जब कोई व्यक्ति जानबूझकर किसी भावना (Passion) को जगाने के बाद कोई कार्य करता है, तो उस कार्य की स्वेच्छिकता (Voluntariness) भी बढ़ जाती है।
- **उदाहरण -** यदि कोई व्यक्ति जानबूझकर खुद को क्रोधित (Enraged) करता है ताकि वह किसी की हत्या कर सके, तो इस स्थिति में हत्या (Killing) स्वेच्छिक (Voluntary) होती है।
- ऐसे में हत्या की योजना बनाने वाले व्यक्ति को उतना ही दोषी माना जाएगा, जितना उसने पहले से हत्या की संभावना को देखा और समझा था।

➤ मानवीय क्रियाओं में बाधाएं

1. भय (Fear)

- **भय (Fear)** किसी आसन्न खतरे (Impending Danger) से उत्पन्न होने वाली भावनात्मक प्रतिक्रिया (Emotional Reaction) है।
- इसे न्यायसंगत (Just) या अन्यायसंगत (Unjust) रूप से लागू किया जा सकता है -
- **न्यायसंगत भय:** जब कोई वैध अधिकार प्राप्त व्यक्ति इसे लागू करता है, जैसे न्यायाधीश (Judge) का निर्णय देना।
- **अन्यायसंगत भय:** जब कोई व्यक्ति बिना अधिकार के भय उत्पन्न करता है।
- यदि भय इतना तीव्र हो कि वह किसी व्यक्ति की स्वतंत्र इच्छा (Freedom of Choice) को नष्ट कर दे, तो यह किसी कार्य की स्वेच्छिकता को भी नष्ट कर देता है।

2. हिंसा (Violence)

- **हिंसा (Violence)** किसी व्यक्ति पर बाहरी शारीरिक बल (External Physical Force) का प्रयोग है।
- यदि कोई व्यक्ति अपनी पूरी ताकत से विरोध करता है, लेकिन फिर भी उसे मजबूर किया जाता है, तो उस स्थिति में किया गया कार्य अस्वतंत्र (Unfree) माना जाएगा।
- इसलिए, जबरदस्ती (Forced) किए गए कार्य मानवीय क्रियाएं (Human Actions) नहीं होते।

3. आदत (Habit)

- **आदत (Habit)** किसी कार्य को बार-बार दोहराने (Frequent Repetition) से उत्पन्न होने वाली एक विशेषता (Quality) है।
- अच्छी आदतें (Good Habits) - सद्गुण (Virtues) मानी जाती हैं।
- बुरी आदतें (Bad Habits) - अवगुण (Vices) मानी जाती हैं।
- आदत और स्वेच्छिकता (Habit & Voluntariness)
- जब कोई व्यक्ति जानबूझकर (Deliberately) कोई आदत विकसित करता है, तो वह कार्य स्वेच्छा (Voluntary) से किया गया माना जाता है।
- लेकिन कुछ आदतें, जैसे धूमपान (Smoking), समय के साथ अचेतन रूप (Unconsciously) से विकसित हो सकती हैं, जिससे उनका स्वेच्छिक नियंत्रण कम हो जाता है।
- फिर भी, यदि कोई व्यक्ति किसी आदत के परिणामों को पहले से जानता है और फिर भी उसे अपनाता है, तो यह उसकी स्वेच्छिकता को कम नहीं करता।

4. स्वभाव (Temperament) -

स्वभाव किसी व्यक्ति की प्राकृतिक प्रवृत्तियों (Natural Propensities) का योग होता है, जबकि **चरित्र (Character)** व्यक्ति की अर्जित प्रवृत्तियों (Acquired

Propensities), जैसे कि आदतों (Habits), का संग्रह होता है।

- स्वभाव और चरित्र कभी-कभी किसी कार्य की **स्वेच्छिकता (Voluntariness)** को कम कर सकते हैं, लेकिन इसे पूरी तरह नष्ट नहीं कर सकते।
- इन तत्वों (Elements) की उपस्थिति किसी कार्य के स्वभाव को पूरी तरह बदल देती है, जिससे वह अब "**मानवीय क्रिया**" (Human Action) नहीं रह जाता, बल्कि केवल "**मानव द्वारा किया गया कार्य**" (Action of/by Human) बन जाता है।
- इस प्रकार के कार्य नैतिक जांच (Ethical Examination) या नैतिकता के निर्धारण (Deciding the Morality of an Action) के दायरे से बाहर होते हैं।

मानवीय क्रिया की नैतिकता - सार, निर्धारक और परिणाम

❖ मानवीय क्रिया का उद्देश्य

- **एपिक्यूरियन्स (Epicureans)** - उनका मानना था कि मानव जाति की खुशी जीवन द्वारा पेश किए जाने वाले सुख को प्राप्त करने में निहित है, जिससे मानवीय क्रिया का अंतिम उद्देश्य सुख है।
- **स्टोइक्स (Stoics)** - उन्होंने दावा किया कि मानवीय क्रिया का परम उद्देश्य मानव मन का संवर्धन (Cultivation of the Human Mind) या ज्ञान अर्जित करना (Acquiring Knowledge) है।
- **भौतिकवाद (Materialism)** - भौतिकवादियों का मानना था कि मानव की खुशी (Happiness) भौतिक संपत्ति (Material Goods) प्राप्त करने में निहित है। इसलिए, संपत्ति अर्जित करना (Acquisition of Wealth) ही मानवीय क्रिया का परम उद्देश्य होना चाहिए।
- **मानवतावाद (Humanism)** - मानवतावादियों का मानना है कि मानवीय क्रिया का अंतिम उद्देश्य मानव जाति की समृद्धि (Prosperity) और प्रगति (Progress) प्राप्त करना है।
- **मानवीयता (Humanitarianism)** - मानवीयता में यह विचार किया जाता है कि मानवीय क्रिया का परम उद्देश्य सेवा (Service) है—चाहे वह पूरी मानवता (Humankind) की सेवा हो, या किसी विशेष राष्ट्र (Nation), संगठन (Organization) या समूह (Group) की सेवा हो।

➤ नैतिक भलाई (Moral Good) और नैतिक बुराई (Moral Evil)

- एक ही शारीरिक क्रिया (Physical Action) अलग-अलग समय पर नैतिक रूप से अच्छी (Morally Good) या बुरी (Morally Evil) हो सकती है।
- उदाहरण के लिए, लाल बत्ती पार करना (Driving through a Red Light) नैतिक रूप से बुरा (Morally Evil) हो सकता है, लेकिन यदि लाल बत्ती मौजूद न हो, तो उसी

होगी, बनिस्बत उनके जो केवल तकनीकी और डिजिटल कौशल (Technical & Digital Skills) में निपुण हैं।

- कर्मचारियों को बार-बार नए कौशल (Reskilling) सिखाना आवश्यक होगा।
- कर्मचारियों के लिए नए अवसरों के क्षेत्र का विस्तार करना।
- कंपनियों के भर्ती, शिक्षण और फीडबैक कार्यक्रमों को मशीन युग (Age of Machines) के अनुसार ढालना आवश्यक है।
- तकनीकी परिवर्तनों के साथ तालमेल बैठाने के लिए मानसिकता में लचीलापन अपनाना।
- संतोषजनक नौकरियों की संख्या समय के साथ घट रही है। मानव और मशीन के बीच समन्वय (Synergy) को प्राप्त करने के लिए, भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EI) ही एकमात्र ऐसा हथियार होगा जिससे मानव कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) से आगे रह सकेगा।

अध्याय - 20

भारतीय और विश्व के नैतिक विचारक एवं

दार्शनिक

UPSC परीक्षा में नैतिक विचारकों एवं दार्शनिकों से जुड़े प्रश्न नैतिकता (Ethics) के दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

IAS अभ्यर्थियों को इनका अर्थ और अनुप्रयोग अच्छे से समझना चाहिए क्योंकि UPSC प्रीलिम्स और मुख्य परीक्षा (Mains) दोनों में इनसे जुड़े प्रश्न पूछे जा सकते हैं। ये विषय समसामयिक घटनाओं (Current Affairs) से भी गहराई से जुड़े होते हैं, और अक्सर पूछे गए प्रश्न इन्हीं घटनाओं पर आधारित होते हैं। इसलिए, केवल मानक पाठ्यपुस्तकों पर निर्भर न रहें, बल्कि **समाचार पत्रों और विश्लेषणों** को भी पढ़ें।

यह अध्याय नैतिकता के सैद्धांतिक (Theoretical) और व्यावहारिक (Practical) दोनों पक्षों को जोड़ने में मदद करता है।

इसके अलावा, यह नैतिकता से जुड़े उत्तरों और केस स्टडीज (Case Studies) को तार्किक रूप से प्रमाणित करने का आधार प्रदान करता है।

कोट (Quote) आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिए सुझाव:

- उत्तर लिखते समय विचारकों के सिद्धांतों और उनकी प्रासंगिकता को व्यावहारिक रूप में प्रस्तुत करें।
- उत्तर में नैतिक सिद्धांतों (Ethical Principles) का तार्किक और उपयुक्त उपयोग करें।
- समसामयिक परिप्रेक्ष्य (Current Affairs) से उत्तर को अधिक प्रभावी बनाएं।
- उत्तर देते समय स्पष्टता (Clarity) और संक्षिप्तता (Conciseness) बनाए रखें।

➤ **दार्शनिकता (Philosophy) क्या है ?**

- "Philosophy" शब्द ग्रीक भाषा के "Philosophia" से लिया गया है, जिसका अर्थ है "ज्ञान के प्रति प्रेम" (Love of Wisdom)।
- दार्शनिकता जीवन, मानव अस्तित्व, तर्क, ईश्वर, धर्म आदि से जुड़े कुछ मौलिक प्रश्नों के उत्तर देने का प्रयास करती है।
- मनुष्य एक सामाजिक प्राणी होने के नाते **कारण-प्रभाव (Cause-Effect) संबंधों** को समझना चाहता है और इसी जिज्ञासा के कारण वह समाज और जीवन से जुड़े प्रश्न पूछता है।
- यह **सत्य (Truth) और ज्ञान (Knowledge) की खोज** में सहायक होती है।
- दार्शनिकता को भौतिक (Physical) और अमूर्त (Intangible) दोनों ही रूपों में लागू किया जा सकता है।

- यह भौतिक जगत (Physical World) के साथ-साथ ईश्वर (God), ब्रह्मांड (Cosmology), और कल्पनात्मक विषयों पर भी लागू होती है।

➤ दार्शनिक (Philosophers)

भारतीय दार्शनिक (Indian Philosophers)

भारतीय दर्शन

- कौटिल्य
- तिरुवल्लीवर
- स्वामी विवेकानंद
- महात्मा गांधी
- जवाहरलाल नेहरू
- पाश्चात्य दार्शनिक (Western Philosophers)

- सुकरात (Socrates)
- प्लेटो (Plato)
- अरस्तू (Aristotle)
- एपिक्यूरस (Epicurus)
- मैकियावेली (Machiavelli)
- थॉमस एक्विनास (Thomas Aquinas)
- थॉमस हॉब्स (Thomas Hobbes)
- रूसो (Rousseau)
- जॉन लॉक (John Locke)
- जे. एस. मिल (JS Mill)
- इमैनुएल कांट (Immanuel Kant)

➤ भारतीय दर्शन की प्रमुख विचारधाराएँ (Indian Schools of Philosophy)

भारतीय दर्शन छह प्रमुख दार्शनिक विचारधाराओं में विभाजित है, जिन्हें "षड्दर्शन" कहा जाता है। ये प्राचीन भारतीय दर्शन के मूल ग्रंथ हैं।

दर्शन	लेखक	मुख्य विषय
सांख्य दर्शन	कपिल	शारीरिक और मानसिक पीड़ाओं को दूर करना और मुक्ति प्राप्त करना।
योग दर्शन	पतंजलि	वैराग्य के लिए ध्यान और समाधि का अभ्यास।
न्याय दर्शन	गौतम	ईश्वर और सृष्टि के चरणों की तार्किक खोज।
वैशेषिक दर्शन	कणाद ऋषि	तर्क का विज्ञान और माया की निरर्थकता।
मीमांसा दर्शन	जैमिनी	वेद शाश्वत और दिव्य हैं।
उत्तर मीमांसा दर्शन (वेदांत दर्शन)	बादरायण	आत्मा, माया और सृष्टि के दिव्य स्वभाव की व्याख्या करता है।

सांख्य / सांख्य दर्शन

<https://www.infusionnotes.com/>

सांख्य (संस्कृत में "गणना" या "संख्या"), जिसे **Sankhya** भी कहा जाता है।

- **सांख्य दर्शन प्रकृति (प्रकृति)** और शाश्वत आत्मा (**पुरुष**) के बीच द्वैतवाद (Dualism) को मानता है।
- ये दोनों प्रारंभ में अलग होते हैं, लेकिन सृष्टि के विकास में **पुरुष, प्रकृति** के विभिन्न तत्वों के साथ स्वयं को पहचानने की भूल कर बैठता है।
- **सही ज्ञान** तब प्राप्त होता है जब पुरुष स्वयं को प्रकृति से भिन्न समझ पाता है।

➤ शरीर और पुनर्जन्म की अवधारणा (Body and Rebirth Concept)

- सांख्य दर्शन के अनुसार, दो प्रकार के शरीर होते हैं:
 1. **स्थूल शरीर (Temporal Body)** - जो नश्वर है और मृत्यु के साथ समाप्त हो जाता है।
 2. **सूक्ष्म शरीर (Subtle Body)** - यह मृत्यु के बाद भी बना रहता है और पुनर्जन्म के दौरान नए स्थूल शरीर में प्रवेश करता है।

सूक्ष्म शरीर में उच्च मानसिक क्रियाएँ होती हैं:

- **बुद्धि (Buddhi)** - चेतना (Consciousness)
- **अहंकार (Ahamkara)** - "मैं" की भावना (I-consciousness)
- **मन (Manas)** - इंद्रियों से प्राप्त संवेदनाओं का समन्वय (Mind as a coordinator of sense impressions)
- **प्राण (Prana)** - श्वास और जीवन शक्ति (Breath, the principle of vitality)

गुण (गुणों की अवधारणा - Gunas)

सांख्य दर्शन में प्रकृति के तीन मूलभूत गुण होते हैं, जिन्हें **गुण** कहा जाता है। ये केवल **प्रकृति** का ही हिस्सा नहीं हैं, बल्कि ये व्यक्ति के मनोवैज्ञानिक और शारीरिक व्यवहार को भी प्रभावित करते हैं।

गुण (Guna)	अर्थ (Meaning)	विशेषताएँ (Characteristics)
तमस (Tamas)	अंधकार	अज्ञानता, जड़ता, आलस्य
रजस (Rajas)	जोश/उत्साह	ऊर्जा, भावनाएँ, क्रियाशीलता
सत्त्व (Sattva)	शुद्धता	ज्ञान, शांति, प्रकाश

गुणों से संबंधित व्यक्तित्व प्रकार (Personality Types)

प्रत्येक व्यक्ति में इन तीनों गुणों का मिश्रण होता है, लेकिन एक गुण प्रमुख रूप से प्रभावी होता है, जिसके आधार पर व्यक्तित्व का निर्धारण होता है:

गुण (Guna)	व्यक्तित्व प्रकार (Personality Type)
तमस (Tamas)	आलसी, अज्ञानी, निष्क्रिय व्यक्ति
रजस (Rajas)	भावुक, उत्साही, जोशीला व्यक्ति
सत्त्व (Sattva)	ज्ञानी, शांत और प्रबुद्ध व्यक्ति

सांख्य दर्शन के अनुसार, मोक्ष (Liberation) प्राप्त करने के लिए **सत्त्वगुण** को अपनाना और प्रकृति एवं पुरुष के बीच अंतर को समझना आवश्यक है।

➤ योग दर्शन:

- योग, संस्कृत में: "जोड़ना" या "मिलन"
- योग के व्यावहारिक पहलू इसकी बौद्धिक सामग्री की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जो काफी हद तक सांख्य के दर्शन पर आधारित है, इस अपवाद के साथ कि योग ईश्वर के अस्तित्व को मानता है, जो आध्यात्मिक मुक्ति की तलाश करने वाले अभ्यर्थी के लिए आदर्श है।
- योग सांख्य के साथ मानता है कि आध्यात्मिक मुक्ति (मोक्ष) की प्राप्ति तब होती है जब आत्मा (पुरुष) अज्ञान और भ्रम के परिणामस्वरूप पदार्थ (प्रकृति) के बंधन से मुक्त हो जाता है।
- एक अभ्यर्थी जिसने मन की अस्पष्ट गतिविधियों को नियंत्रित करना और दबाना सीख लिया है और भौतिक वस्तुओं के प्रति आसक्ति को समाप्त करने में सफल रहा है, वह समाधि में प्रवेश करने में सक्षम होगा - यानी, गहरी एकाग्रता की एक अवस्था जो परम वास्तविकता के साथ आनंदमय परम आनंदमय मिलन में परिणत होती है।
- आम तौर पर, योग प्रक्रिया को आठ चरणों (अष्टांग-योग, "आठ-अंगों वाला योग") में वर्णित किया गया है। पहले दो चरण नैतिक तैयारियाँ हैं वे हैं:
 - यम (संयम), जो चोट (अहिंसा), असत्य, चोरी, वासना और लोभ से परहेज को दर्शाता है और
 - नियम ("अनुशासन"), जो शरीर की स्वच्छता, संतोष, तपस्या, अध्ययन और ईश्वर के प्रति भक्ति को दर्शाता है।
- अगले दो चरण शारीरिक तैयारियाँ हैं:
 - आसन ("आसन"), शारीरिक मुद्रा में व्यायामों की एक श्रृंखला, अभ्यर्थी के शरीर को अनुकूलित करने और इसे कोमल, लचीला और स्वस्थ बनाने के लिए अभिप्रेत है।
 - प्राणायाम ("श्वास नियंत्रण") व्यायामों की एक श्रृंखला है जिसका उद्देश्य श्वसन विश्राम को प्रोत्साहित करने के लिए श्वास की लय को स्थिर करना है।
 - पांचवां चरण, (5) प्रत्याहार ("इंद्रियों का प्रत्याहार"), इंद्रियों के नियंत्रण, या बाहरी वस्तुओं से इंद्रियों के ध्यान को वापस लेने की क्षमता को शामिल करता है।

- उपरोक्त पाँच चरण योग के बाहरी सहायक हैं, शेष तीन विशुद्ध रूप से मानसिक या आंतरिक सहायक हैं।
- 6. धारणा ("पकड़े रहना") बाहरी वस्तुओं के बारे में जागृकता को लंबे समय तक एक वस्तु तक सीमित और सीमित करने की क्षमता है (एक सामान्य अभ्यास मन को ध्यान की वस्तु पर केंद्रित करना है, जैसे नाक की नोक या देवता की छवि)।
- 7. ध्यान ("एकाग्र ध्यान") अहंकार की किसी भी स्मृति से परे, ध्यान की वस्तु का निर्बाध चिंतन है।
- 8. समाधि ("संपूर्ण आत्म-संग्रह") अंतिम चरण है और संसार, या पुनर्जन्म के चक्र से मुक्ति प्राप्त करने की एक पूर्व शर्त है। इस अवस्था में ध्यानी अपनी ध्यान की वस्तु और स्वयं को एक के रूप में देखता या अनुभव करता है।

'योग' का शाब्दिक अर्थ है 'मिलन'- व्यक्तिगत आत्मा का सार्वभौमिक आत्मा के साथ आध्यात्मिक मिलन। भगवद् गीता योग को उस अवस्था के रूप में परिभाषित करती है जिससे बढ़कर कुछ नहीं है या प्राप्त करने योग्य है और जिसमें दृढ़ता से स्थापित होकर व्यक्ति सभी पीड़ाओं और दुखों से मुक्त हो जाता है। पतंजलि के अनुसार, योग शरीर, इंद्रियों और मन के नियंत्रण के माध्यम से और पुरुष और प्रकृति के बीच सही भेदभाव के माध्यम से पूर्णता प्राप्त करने का एक आध्यात्मिक प्रयास है। योग कैवल्य के सांख्य आदर्श को प्राप्त करने के लिए सांख्य दर्शन के सैद्धांतिक आदर्शों की प्राप्ति का व्यावहारिक मार्ग है। इसमें अंततः ध्यान प्राप्त करने के लिए नैतिक संयम और आध्यात्मिक अनिवार्यताएँ शामिल हैं जिसमें स्वयं पूरी तरह से और पारदर्शी रूप से समझा जाता है।

ज्ञान का स्रोत - योग तीन प्रमाणों को स्वीकार करता है जो सांख्य द्वारा माने जाते हैं - प्रत्यक्ष ज्ञान, अनुमान और मौखिक गवाही। हालांकि योग कहता है कि केवल एक पुरुष (सर्वोच्च स्व) है जो शाश्वत, सर्वव्यापी, समय और स्थान से परे है, जबकि सांख्य व्यक्त करता है कि कई पुरुष (असंख्य आत्माएँ) हैं।

क्लेश - पुरुष शाश्वत रूप से शुद्ध और दिव्य चेतना है। यह चित्त है जिसमें पुरुष का प्रतिबिंब है, लौकिक अहंकार (जीव) है, जो जन्म और मृत्यु के अधीन है और सभी दर्दनाक या सुखद अनुभवों के अधीन है। पाँच प्रकार के दुख (क्लेश) हैं जिनके अधीन यह है - अज्ञान, अहंकार, आसक्ति, द्वेष, जीवन से चिपके रहना और मृत्यु का सहज भय।

अष्टांग योग - योग शरीर, इंद्रियों और मन पर नियंत्रण की वकालत करता है। यह शरीर को मारना नहीं चाहता बल्कि इसकी पूर्णता की सिफारिश करता है। संवेदी आसक्ति और जुनून शरीर के साथ-साथ मन को भी विचलित करते हैं। उन्हें जीतना होगा और उनसे उबरने के लिए, योग हमें अनुशासन का अष्टमार्ग या अष्टांग योग प्रदान करता है।

ईश्वर और मुक्ति - योग को ईश्वर के साथ सांख्य के रूप में वर्णित किया गया है। योग ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार करता है जो कई वस्तुओं में से एक है जिन पर योगी अपना



कठिनाइयों और संघर्षों के बाद ईश्वर इस संसार का विनाश करके सभी जीवों को पीड़ा से मुक्ति प्रदान करता है।

➤ मीमांसा दर्शन (Mimamsa Philosophy)

- मीमांसा (संस्कृत: "चितन" या "आलोचनात्मक जांच") भारतीय दर्शन की छह प्रमुख प्रणालियों में से एक है।
- मीमांसा दर्शन वेदांत का मूल आधार है और इसने हिंदू कानून की संरचना को गहराई से प्रभावित किया है।
- इसका मुख्य उद्देश्य वेदों की व्याख्या के नियमों को स्थापित करना और वैदिक अनुष्ठानों के पालन के लिए दार्शनिक औचित्य प्रदान करना है।
- क्योंकि मीमांसा वेदों के प्रारंभिक भाग (संहिता और ब्राह्मण ग्रंथ) से संबंधित है, इसे पूर्व मीमांसा (Purva-Mimamsa) या कर्म मीमांसा (Karma-Mimamsa) भी कहा जाता है।
- दूसरी ओर, वेदों के उत्तर भाग (उपनिषदों) से संबंधित वेदांत को उत्तर मीमांसा (Uttara-Mimamsa) या ज्ञान मीमांसा (Jnana-Mimamsa) कहा जाता है।

संस्थापक

मीमांसा दर्शन की स्थापना ऋषि जैमिनि ने की थी, जो 'मीमांसा सूत्र' के लेखक हैं।

- यह वेदों के प्रारंभिक भाग पर केंद्रित है, जो मानव कर्म, अनुष्ठान और यज्ञों से संबंधित है, इसलिए इसे पूर्व मीमांसा (Purva-Mimamsa - PM) कहा जाता है।

मीमांसा का तत्त्वज्ञान (Metaphysics of Mimamsa)

- पूर्व मीमांसा एक बहुवादी (Pluralistic) और यथार्थवादी (Realistic) दर्शन है, लेकिन यह प्रायोगिक (Empirical) नहीं है क्योंकि यह अतिंद्रिय (Extra-Sensory) तत्वों को भी वास्तविक मानता है।
- यह दर्शन मानता है कि ब्रह्मांड शाश्वत और अजन्मा है (अर्थात् यह ईश्वर द्वारा निर्मित नहीं है)।
- ब्रह्मांड की सृष्टि और विनाश का संचालन कर्म के नियमों (Laws of Karma) द्वारा होता है।

ज्ञान मीमांसा (Epistemology)

ज्ञान मीमांसा उस ज्ञान से संबंधित है जो हमें किसी वस्तु के बारे में प्राप्त होता है। जब हम किसी वस्तु को पहचानते हैं, तो हम उसके बारे में ज्ञान प्राप्त करते हैं। लेकिन यह सुनिश्चित करने के लिए कि हमारा ज्ञान सही है या नहीं, हमें निम्नलिखित चार शर्तों पर विचार करना चाहिए—

1. यह दोषपूर्ण कारणों से उत्पन्न नहीं होना चाहिए।
2. यह किसी विरोधाभास से मुक्त होना चाहिए, यानी यह आत्म-संगत (self-consistent) होना चाहिए और बाद में प्राप्त ज्ञान से विरोधाभास नहीं करना चाहिए।
3. यह किसी ऐसी वस्तु का अनुभव प्रदान करे जिसे पहले अनुभव नहीं किया गया हो।
4. यह वस्तु का सही प्रतिनिधित्व करे।

जब ये सभी शर्तें पूरी होती हैं, तो किसी वस्तु के प्रति हमारी अनुभूति (cognition) को वैध ज्ञान माना जाता है। इन शर्तों को ध्यान में रखते हुए, स्मृति (memory) को वैध ज्ञान नहीं माना जा सकता, क्योंकि यह पूर्व अनुभूति के प्रभाव से उत्पन्न होती है, जो तीसरी शर्त का उल्लंघन करती है।

➤ वैध ज्ञान के स्रोत (Sources of Valid Knowledge)

1. प्रत्यक्ष (Perception) -

यह किसी वस्तु और इंद्रियों के प्रत्यक्ष संपर्क से उत्पन्न होता है। जो कुछ भी हमारी इंद्रियों द्वारा प्रत्यक्ष रूप से अनुभव किया जाता है, वह सत्य होता है, क्योंकि प्रत्यक्ष अनुभव में वस्तुओं को हम सीधे अपने इंद्रियों के माध्यम से जानते हैं। उदाहरण के लिए, किसी टेबल को देखना और छूना हमें उसके अस्तित्व का ज्ञान प्रदान करता है।

2. अनुमान (Inference) -

इसमें किसी वस्तु की उपस्थिति का अनुमान लगाया जाता है, क्योंकि समान परिस्थितियों में इसे हमेशा उपस्थित पाया गया है। इस प्रकार, किसी वस्तु की अनुभूति हमारे पूर्व ज्ञान पर आधारित होती है। उदाहरण के लिए, यदि हम किसी दूरस्थ पहाड़ी पर धुआं देखते हैं, तो हम अनुमान लगाते हैं कि वहाँ आग लगी होगी।

3. तुलना / उपमान (Comparison) -

इसे अन्य समान प्रकार की वस्तुओं से तुलना करके निर्धारित किया जाता है। उदाहरण के लिए, मान लीजिए कि आपने जंगली गाय नहीं देखी है, लेकिन एक वनपाल ने आपको बताया कि एक जंगली गाय एक देशी गाय की तरह होती है, लेकिन वह अधिक क्रोधी होती है और उसके माथे पर बड़े सींग होते हैं। एक बार जब आप एक जंगली गाय के सामने आते हैं और वनपाल द्वारा किए गए विवरणों की तुलना करके उसे पहचान लेते हैं।

4. मौखिक गवाही / (Verbal Testimony) -

गवाही एक विश्वसनीय व्यक्ति द्वारा कहा गया एक विश्वसनीय कथन है जो न्याय दर्शन के समान है। (संदर्भ ले)

5. अर्थापत्ति (Postulation) -

यह वह ज्ञान है जो दो तथ्यों के बीच के संघर्ष को हल करता है। इसमें एक पूर्वधारणा शामिल है जो दो तथ्यों के बीच उत्पन्न समस्या को हल करती है। उदाहरण के लिए, विनय दिन में उपवास करके एक मोटा आदमी है। इस प्रस्ताव में हमें दो तथ्य मिलते हैं - विनय एक मोटा जीवित इंसान है और वह दिन के समय नहीं खा रहा है। इस संघर्ष को हल करने के लिए, यानी एक व्यक्ति कैसे मोटा होगा और दिन के समय कुछ भी नहीं खाएगा, हम तीसरे तथ्य के अस्तित्व को मानते हैं, यानी वह रात में खाता होगा।

6. अनुपलब्धि (Non-apprehension) - यह किसी वस्तु के गैर-अस्तित्व का तत्काल ज्ञान है। यहाँ, कोई व्यक्ति अपनी

- **शिकायतों की निगरानी** - हमारे पास शिकायत निगरानी प्रणाली है, लेकिन यह प्रणाली अपनी जिम्मेदारी rarely निभाती है। ऐसी शिकायतों को हल करने के लिए समय सीमा तय की जानी चाहिए और परिणामों को निर्धारित समय सीमा के भीतर प्राप्त किया जाना चाहिए।
- **खुफिया जानकारी एकत्र करना** - एक पर्यवेक्षक अधिकारी को खुफिया जानकारी एकत्र करनी चाहिए और अपने अधीनस्थों की ईमानदारी का मूल्यांकन करना चाहिए, जो उनके द्वारा मामलों, शिकायतों और विभिन्न स्रोतों से मिली प्रतिक्रिया के आधार पर किया जाए।
- **सतर्कता नेटवर्क** - भ्रष्टाचार से संबंधित कई अनुशासनात्मक और आपराधिक मामले विभिन्न प्राधिकरणों के पास लंबित हैं। ऐसे मामलों का एक राष्ट्रीय डेटाबेस बनाना वांछनीय होगा, जो सार्वजनिक डोमेन में होना चाहिए। CVC इस तरह के नेटवर्क डेटाबेस की स्थापना में अग्रणी भूमिका निभा सकता है।
- **ऑडिट** - CAG और AG ऑडिट के साथ-साथ, अनियमितताओं की निगरानी के लिए फॉरेंसिक ऑडिट किए जाने चाहिए।

अध्याय - 35

नैतिकता केस स्टडीज - यूपीएससी मेन्स

(2020-2013)

नैतिकता केस स्टडीज

2020

➤ केस स्टडी 1

- राजेश कुमार एक वरिष्ठ लोक सेवक हैं, जिनकी ईमानदारी और स्पष्टवादिता की प्रतिष्ठा है, जो वर्तमान में वित्त मंत्रालय में बजट विभाग के प्रमुख के रूप में तैनात हैं। उनका विभाग वर्तमान में राज्यों को बजटीय सहायता प्रदान करने में व्यस्त है, जिनमें से चार राज्यों में वित्तीय वर्ष के भीतर चुनाव होने वाले हैं।
- इस वर्ष के वार्षिक बजट में **राष्ट्रीय आवास योजना (NHS)** के लिए ₹8300 करोड़ की राशि आवंटित की गई थी, जो समाज के कमजोर वर्गों के लिए एक केंद्रीय प्रायोजित सामाजिक आवास योजना है। NHS के लिए जून तक ₹775 करोड़ की राशि जारी की जा चुकी है।
- वाणिज्य मंत्रालय काफी समय से एक दक्षिणी राज्य में विशेष आर्थिक क्षेत्र (SEZ) स्थापित करने के मामले में चर्चा कर रहा था, ताकि निर्यात को बढ़ावा मिल सके। केंद्र और राज्य के बीच दो वर्षों की विस्तृत चर्चा के बाद, अगस्त में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने परियोजना को मंजूरी दी। आवश्यक भूमि प्राप्त करने की प्रक्रिया शुरू की गई।
- 18 महीने पहले एक प्रमुख सार्वजनिक क्षेत्र इकाई (PSU) ने उत्तरी राज्य में एक बड़ा प्राकृतिक गैस प्रसंस्करण संयंत्र स्थापित करने की आवश्यकता का अनुमान लगाया था, जो क्षेत्रीय गैस ग्रिड के लिए आवश्यक था। आवश्यक भूमि पहले से ही PSU के कब्जे में है। गैस ग्रिड राष्ट्रीय ऊर्जा सुरक्षा रणनीति का एक आवश्यक घटक है। वैश्विक बिडिंग के तीन दौरों के बाद, परियोजना एक बहुराष्ट्रीय कंपनी M/s XYZ हाइड्रोकार्बन्स को दी गई। MNC को भुगतान की पहली किस्त दिसंबर में किए जाने का कार्यक्रम है।
- वित्त मंत्रालय से इन दोनों विकासवात्मक परियोजनाओं के लिए ₹6000 करोड़ की अतिरिक्त राशि आवंटित करने का अनुरोध किया गया था। यह निर्णय लिया गया कि इस पूरी राशि को NHS के आवंटन से पुनः आवंटित करने की सिफारिश की जाएगी। फाइल को बजट विभाग के टिप्पणियों और आगे की प्रक्रिया के लिए अग्रणी किया गया। जब राजेश कुमार ने केस फाइल का अध्ययन किया, तो उन्हें एहसास हुआ कि यह पुनः आवंटन NHS के क्रियान्वयन में अत्यधिक देरी का कारण बन सकता है, जो वरिष्ठ राजनेताओं के रैलियों में बहुत प्रचारित परियोजना है। इसके

परिणामस्वरूप, वित्तीय संसाधनों की कमी से SEZ में वित्तीय हानि और अंतर्राष्ट्रीय परियोजना में भुगतान में देरी के कारण राष्ट्रीय शर्मिंदगी हो सकती है।

- राजेश कुमार ने इस मामले पर अपने सीनियर से चर्चा की। उन्हें यह बताया गया कि यह राजनीतिक रूप से संवेदनशील स्थिति है जिसे तुरंत संसाधित करने की आवश्यकता है। राजेश कुमार ने समझा कि NHS से फंड्स का पुनः आवंटन सरकार के लिए संसद में कठिन सवाल उठा सकता है।

इस मामले के संदर्भ में निम्नलिखित पर चर्चा करें:

- एक कल्याणकारी परियोजना से विकासात्मक परियोजनाओं के लिए फंड्स के पुनः आवंटन में शामिल नैतिक मुद्दे क्या हैं ?
- सार्वजनिक धन के उचित उपयोग की आवश्यकता को देखते हुए, राजेश कुमार के पास कौन से विकल्प उपलब्ध हैं ? क्या इस्तीफा देना एक योग्य विकल्प है ?

➤ केस स्टडी 2

- **भारत मिसाइल लिमिटेड (BML)** के चेयरमैन टीवी पर एक कार्यक्रम देख रहे थे, जिसमें प्रधानमंत्री देश को आत्मनिर्भर भारत के निर्माण की आवश्यकता पर संबोधित कर रहे थे। उन्होंने अवचेतन रूप से सहमति में सिर हिलाया और अपने आप मुस्कराए क्योंकि उन्होंने बीएमएल के पिछले दो दशकों में यात्रा की मानसिक समीक्षा की। BML ने पहले पीढ़ी के **एंटी-टैंक गाइडेड मिसाइल्स (ATGM)** बनाने से लेकर अत्याधुनिक ATGM हथियार प्रणालियाँ डिजाइन और उत्पादित करने में उल्लेखनीय प्रगति की थी, जो किसी भी सेना के लिए ईर्ष्या का कारण बन सकती थी। उन्होंने इस विचार से मेल खाते हुए एक आह भरी कि सरकार शायद सैन्य हथियारों के निर्यात पर प्रतिबंध की स्थिति को बदलने वाली नहीं है।
- हैरानी की बात यह हुई कि अगले ही दिन उन्हें रक्षा मंत्रालय के महानिदेशक से एक फोन कॉल आया, जिसमें उन्हें बीएमएल द्वारा ATGM उत्पादन बढ़ाने के तरीकों पर चर्चा करने के लिए कहा गया क्योंकि इसे एक मित्रवत विदेशी देश को निर्यात करने की संभावना थी। महानिदेशक चाहते थे कि चेयरमैन अगले सप्ताह दिल्ली में अपने स्टाफ के साथ इस विषय पर विस्तार से चर्चा करें।
- दो दिन बाद, एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में, रक्षा मंत्री ने कहा कि उनका उद्देश्य अगले पांच वर्षों में मौजूदा हथियारों के निर्यात स्तर को दोगुना करना है। इससे देश में स्वदेशी हथियारों के विकास और निर्माण के लिए वित्तीय प्रोत्साहन मिलेगा। उन्होंने यह भी कहा कि सभी स्वदेशी हथियार निर्माण करने वाले देशों का अंतर्राष्ट्रीय हथियार व्यापार में बहुत अच्छा रिकॉर्ड है।

BML के चेयरमैन के रूप में, आप निम्नलिखित बिंदुओं पर क्या विचार रखते हैं ?

- एक जिम्मेदार देश जैसे भारत के हथियार निर्यातक के रूप में, हथियार व्यापार में क्या नैतिक मुद्दे शामिल हैं?

- विदेशी सरकारों को हथियार बेचने के निर्णय पर प्रभाव डालने वाले पांच नैतिक कारक क्या होंगे?

➤ केस स्टडी 3

- रामपुरा, एक दूरस्थ जिला जहाँ आदिवासी आबादी रहती है, अत्यधिक पिछड़ेपन और घोर गरीबी से चिह्नित है। कृषि स्थानीय आबादी का मुख्य आधार है, हालांकि यह बहुत छोटे भूमि जोत के कारण मुख्य रूप से निर्वाह है। यहां नगण्य औद्योगिक या खनन गतिविधि है। यहां तक कि लक्षित कल्याणकारी कार्यक्रमों ने भी आदिवासी आबादी को अपर्याप्त रूप से लाभान्वित किया है। इस प्रतिबंधात्मक परिदृश्य में, युवा परिवार की आय को पूरा करने के लिए अन्य राज्यों में प्रवास करने लगे हैं। नाबालिग लड़कियों की दुर्दशा यह है कि उनके माता-पिता को श्रम ठेकेदारों द्वारा पास के राज्य के बीटी कॉटन फार्मों में काम करने के लिए भेजने के लिए राजी किया जाता है। नाबालिग लड़कियों की कोमल उंगलियां कपास तोड़ने के लिए बहुत उपयुक्त हैं। इन खेतों में अपर्याप्त जीवन और काम करने की स्थिति ने नाबालिग लड़कियों के लिए गंभीर स्वास्थ्य समस्याएं पैदा कर दी हैं। अधिवास और कपास खेतों के जिलों में गैर सरकारी संगठन (NGO) समझौता किए हुए प्रतीत होते हैं और उन्होंने बाल श्रम और क्षेत्र के विकास के दोहरे मुद्दों का प्रभावी ढंग से समर्थन नहीं किया है।
- आपको रामपुरा के जिला कलेक्टर के रूप में नियुक्त किया गया है। इसमें शामिल नैतिक मुद्दों की पहचान करें। आप अपने जिले की नाबालिग लड़कियों की स्थिति में सुधार करने और जिलों में समग्र आर्थिक परिदृश्य को बेहतर बनाने के लिए कौन से विशिष्ट कदम उठाएंगे ?

➤ केस स्टडी 4

- आप एक बड़े शहर के नगर आयुक्त हैं, जिनकी बहुत ईमानदार और सीधे अधिकारी के रूप में प्रतिष्ठा है। आपके शहर में एक विशाल बहुउद्देशीय मॉल का निर्माण हो रहा है जिसमें बड़ी संख्या में दैनिक वेतन भोगी कर्मचारी कार्यरत हैं। एक रात, मानसून के दौरान, छत का एक बड़ा हिस्सा ढह गया, जिससे दो नाबालिगों सहित चार मजदूरों की तत्काल मौत हो गई। कई और गंभीर रूप से घायल हो गए, जिन्हें तत्काल चिकित्सा सहायता की आवश्यकता थी। इस दुर्घटना के कारण बड़ा हो-हल्ला हुआ, जिससे सरकार को जांच शुरू करने के लिए मजबूर होना पड़ा।
- आपकी प्रारंभिक जांच में कई विसंगतियां सामने आई हैं। निर्माण के लिए इस्तेमाल की गई सामग्री घटिया गुणवत्ता की थी। स्वीकृत भवन योजनाओं में केवल एक बेसमेंट की अनुमति होने के बावजूद, एक अतिरिक्त बेसमेंट का निर्माण किया गया है। यह नगर निगम के भवन निरीक्षक द्वारा समय-समय पर किए गए निरीक्षणों के दौरान अनदेखा कर दिया गया था। आपकी जांच में, आपने देखा कि मॉल के निर्माण को शहर की जोनल मास्टर प्लान में हरित पट्टी और स्लिप रोड के लिए चिह्नित क्षेत्रों पर अतिक्रमण करने के

ने सभी विरोधों को दरकिनार करते हुए, शहर के पास इकाई की अनुमति दे दी। यह इकाई 10 साल पहले स्थापित की गई थी और हाल तक पूरी तरह से चल रही थी। औद्योगिक अपशिष्टों से होने वाले प्रदूषण से क्षेत्र की भूमि, जल और फसलें प्रभावित हो रही थी। इससे मनुष्यों और जानवरों के स्वास्थ्य को भी गंभीर समस्याएं हो रही थी। इसके कारण संयंत्र को बंद करने की मांग को लेकर कई आंदोलन हुए। हाल ही के एक आंदोलन में, हजारों लोगों ने भाग लिया, जिससे कानून और व्यवस्था की समस्या पैदा हो गई, जिसके लिए कठोर पुलिस कार्रवाई की आवश्यकता पड़ी। जन आक्रोश के बाद, राज्य सरकार ने कारखाने को बंद करने का आदेश दिया। कारखाने के बंद होने से न केवल उन श्रमिकों की बेरोजगारी हुई जो कारखाने में कार्यरत थे बल्कि वे भी जो सहायक इकाइयों में काम कर रहे थे। इसने उन उद्योगों को भी बहुत बुरी तरह प्रभावित किया जो इसके द्वारा निर्मित रसायनों पर निर्भर थे। इन मुद्दों से निपटने की जिम्मेदारी साँपी गई एक वरिष्ठ अधिकारी के रूप में, आप इसे कैसे संबोधित करेंगे? (250 शब्द)

5. डॉ. एक्स शहर के एक प्रमुख चिकित्सक हैं। उन्होंने एक धर्मार्थ ट्रस्ट की स्थापना की है जिसके माध्यम से वे शहर में एक सुपर-स्पेशलिटी अस्पताल स्थापित करने की योजना बना रहे हैं ताकि समाज के सभी वर्गों की चिकित्सा आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके। संयोग से, राज्य का वह हिस्सा वर्षों से उपेक्षित था। प्रस्तावित अस्पताल क्षेत्र के लिए वरदान साबित होगा। आप उस क्षेत्र की कर जांच एजेंसी के प्रमुख हैं। डॉक्टर के क्लिनिक के निरीक्षण के दौरान, आपके अधिकारियों को कुछ बड़ी अनियमितताएं मिली हैं। उनमें से कुछ पर्याप्त हैं जिनके कारण डॉक्टर द्वारा अब तक भुगतान किए जाने वाले कर की काफी रोकथाम हुई है। डॉक्टर सहयोगात्मक हैं। वे तुरंत कर का भुगतान करने का वचन देते हैं। हालांकि, उनकी कर अनुपालन में कुछ अन्य कमियां हैं जो पूरी तरह से तकनीकी प्रकृति की हैं। यदि एजेंसी द्वारा इन तकनीकी खामियों का पीछा किया जाता है, तो डॉक्टर का काफी समय और ऊर्जा उन मुद्दों में लग जाएगी जो इतने गंभीर, जरूरी या कर संग्रह प्रक्रिया के लिए सहायक भी नहीं हैं। इसके अलावा, पूरी संभावना है कि इससे अस्पताल के आने की संभावनाओं में बाधा आएगी। आपके सामने दो विकल्प हैं: व्यापक दृष्टिकोण अपनाते हुए, पर्याप्त कर अनुपालन सुनिश्चित करना, और उन चूक को अनदेखा करना जो केवल तकनीकी प्रकृति के हैं। मामले का सख्ती से पीछा करना और सभी मोर्चों पर आगे बढ़ना, चाहे पर्याप्त हो या केवल तकनीकी। कर एजेंसी के प्रमुख के रूप में, आप कौन सी कार्रवाई चुनेंगे और क्यों? (250 शब्द)

6. मंत्रालय में एक वरिष्ठ अधिकारी के रूप में, आपके पास सार्वजनिक डोमेन में अधिसूचित होने से पहले महत्वपूर्ण नीतिगत निर्णयों और आगामी बड़ी घोषणाओं, जैसे सड़क

निर्माण परियोजनाओं तक पहुंच है। मंत्रालय एक मेगा सड़क परियोजना की घोषणा करने वाला है जिसके लिए ड्राइंग पहले से ही तैयार हैं। योजनाकारों द्वारा सरकारी भूमि का न्यूनतम उपयोग करने और निजी पार्टियों से न्यूनतम भूमि अधिग्रहण करने के लिए पर्याप्त सावधानी बरती गई है। निजी पार्टियों के लिए मुआवजा दर भी सरकारी नियमों के अनुसार अंतिम रूप दी गई। वनों की कटाई को कम करने का भी ध्यान रखा गया। परियोजना की घोषणा के बाद, यह उम्मीद की जाती है कि उस क्षेत्र और उसके आसपास की रियल एस्टेट की कीमतों में भारी उछाल आएगा। इस बीच, संबंधित मंत्री जोर देते हैं कि आप सड़क को इस तरह से पुनः व्यवस्थित करें कि यह उनके 20 एकड़ के फार्महाउस के करीब आ जाए। उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि वे आपकी पत्नी के नाम पर प्रस्तावित मेगा सड़क परियोजना के आसपास और उसमें प्रचलित दर पर एक बड़ा भूखंड खरीदने की सुविधा प्रदान करेंगे, जो कि बहुत मामूली है। वह आपको यह कहकर भी समझाने की कोशिश करते हैं कि इसमें कोई हर्ज नहीं है क्योंकि वह जमीन कानूनी रूप से खरीद रहे हैं। यदि आपके पास जमीन खरीदने के लिए पर्याप्त धन नहीं है तो वे आपकी बचत को पूरा करने का भी वादा करते हैं। हालांकि, पुनर्निर्माण के कार्य से, बहुत सी कृषि भूमि का अधिग्रहण करना होगा, जिससे सरकार पर काफी वित्तीय बोझ पड़ेगा, और किसानों का विस्थापन भी होगा। मानो यह काफी नहीं है, इसमें बड़ी संख्या में पेड़ों को काटना शामिल होगा जिससे क्षेत्र का हरा-भरा आवरण खत्म हो जाएगा। इस स्थिति का सामना करते हुए, आप क्या करेंगे? विभिन्न हितों के टकराव की गंभीर रूप से जांच करें और बताएं कि एक लोक सेवक के रूप में आपकी जिम्मेदारियां क्या हैं। (250 शब्द)

➤ 2017

1. एक भवन जिसकी तीन मंजिलों के लिए अनुमति थी, एक बिल्डर द्वारा अवैध रूप से 6 मंजिलों तक विस्तारित करते समय ढह जाता है। परिणामस्वरूप, महिलाओं और बच्चों सहित कई निर्दोष मजदूर मारे गए। ये मजदूर विभिन्न स्थानों के प्रवासी हैं। सरकार ने तुरंत पीड़ित परिवारों को नकद राहत की घोषणा की और बिल्डर को गिरफ्तार कर लिया। देश भर में ऐसी घटनाएं होने के कारणों का वर्णन कीजिए। इनकी रोकथाम के उपाय सुझाइए।
2. आप एक ईमानदार और जिम्मेदार सिविल सेवक हैं। आप अक्सर निम्नलिखित बातें देखते हैं:
 - (a) एक आम धारणा है कि नैतिक आचरण का पालन करने से व्यक्ति को कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है और परिवार के लिए समस्याएं पैदा हो सकती हैं, जबकि अनुचित प्रथाएं करियर के लक्ष्यों तक पहुंचने में मदद कर सकती हैं।

- (b) जब अनुचित साधनों को अपनाने वाले लोगों की संख्या बड़ी होती है, तो नैतिक साधनों की ओर झुकाव रखने वाले एक छोटे अल्पसंख्यक से कोई फर्क नहीं पड़ता।
- (c) नैतिक साधनों से चिपके रहना बड़े विकासात्मक लक्ष्यों के लिए हानिकारक है।
- (d) जबकि कोई बड़ी अनैतिक प्रथाओं में शामिल नहीं हो सकता है, लेकिन छोटे उपहार देना और स्वीकार करना सिस्टम को अधिक कुशल बनाता है। उपरोक्त कथनों की उनके गुण-दोषों सहित जांच कीजिए।
3. आप एक आईएएस अधिकारी बनने की आकांक्षा रख रहे हैं और आपने विभिन्न चरणों को पार कर लिया है और अब आपको व्यक्तिगत साक्षात्कार के लिए चुना गया है। साक्षात्कार के दिन, स्थल पर जाते समय आपने एक दुर्घटना देखी जिसमें एक माँ और बच्चा, जो आपके रिश्तेदार हैं, बुरी तरह घायल हो गए। उन्हें तत्काल सहायता की आवश्यकता थी। ऐसी स्थिति में आप क्या करते? अपने कार्य को सही ठहराइए।
4. आप एक सरकारी विभाग में जन सूचना अधिकारी (PIO) हैं। आप जानते हैं कि आरटीआई अधिनियम 2005 प्रशासन में पारदर्शिता और जवाबदेही की परिकल्पना करता है। अधिनियम ने कथित तौर पर मनमाने प्रशासनिक व्यवहार और कार्यों पर एक अंकुश के रूप में कार्य किया है। हालांकि, एक पीआईओ के रूप में आपने देखा है कि ऐसे नागरिक हैं जो आरटीआई आवेदन अपने लिए नहीं बल्कि ऐसे हितधारकों की ओर से दाखिल करते हैं जो कथित तौर पर अपने हितों को आगे बढ़ाने के लिए जानकारी तक पहुंच चाहते हैं। साथ ही, ये आरटीआई कार्यकर्ता हैं जो नियमित रूप से आरटीआई आवेदन दाखिल करते हैं और निर्णय निर्माताओं से पैसे ऐंठने का प्रयास करते हैं। इस प्रकार की आरटीआई सक्रियता ने प्रशासन के कामकाज को प्रतिकूल रूप से प्रभावित किया है और संभवतः उन आवेदनों की वास्तविकता को भी खतरे में डाल दिया है जो अनिवार्य रूप से न्याय प्राप्त करने के उद्देश्य से हैं। आप वास्तविक और गैर-वास्तविक आवेदनों को अलग करने के लिए क्या उपाय सुझाएंगे? अपने सुझावों के गुण-दोष बताइए।
5. आप एक संगठन के मानव संसाधन विभाग के प्रमुख हैं। एक दिन एक कर्मचारी की झूठी पर मृत्यु हो जाती है। उसका परिवार मुआवजे की मांग कर रहा था। हालांकि, कंपनी ने मुआवजा देने से इनकार कर दिया क्योंकि जांच में पता चला कि दुर्घटना के समय वह नशे में था। कंपनी के कर्मचारी मृतक के परिवार के लिए मुआवजे की मांग को लेकर हड़ताल पर चले गए। प्रबंधन बोर्ड के अध्यक्ष ने आपकी सिफारिश मांगी है। आप प्रबंधन को क्या सिफारिश देंगे? प्रत्येक सिफारिश के गुण-दोषों पर चर्चा कीजिए।
6. आप एक स्पेयर पार्ट्स कंपनी A के प्रबंधक हैं और आपको एक बड़ी विनिर्माण कंपनी B के प्रबंधक के साथ एक सौदा करना है। सौदा अत्यधिक प्रतिस्पर्धी है और सौदा

सील करना आपकी कंपनी के लिए महत्वपूर्ण है। सौदे पर रात के खाने पर काम चल रहा है। रात के खाने के बाद विनिर्माण कंपनी B के प्रबंधक ने आपको अपनी कार में होटल छोड़ने की पेशकश की। होटल जाते समय उनकी कार से एक मोटरसाइकिल सवार को टक्कर लग जाती है, जिससे मोटरसाइकिल सवार बुरी तरह घायल हो जाता है। आप जानते हैं कि प्रबंधक तेज गति से गाड़ी चला रहा था और इस प्रकार नियंत्रण खो बैठा। कानून प्रवर्तन अधिकारी मामले की जांच के लिए आता है और आप इसके एकमात्र प्रत्यक्षदर्शी हैं। सड़क दुर्घटनाओं से संबंधित सख्त कानूनों को जानते हुए आप जानते हैं कि घटना का आपका ईमानदार विवरण प्रबंधक के अभियोजन का कारण बनेगा और परिणामस्वरूप सौदा खतरे में पड़ सकता है, जो आपकी कंपनी के लिए बेहद महत्वपूर्ण है।

आपके सामने क्या दुविधाएं हैं? इस स्थिति में आपकी क्या प्रतिक्रिया होगी? (2016)

➤ 2016

1. ABC Ltd. एक बड़ी अंतर्राष्ट्रीय कंपनी है, जिसका विभिन्न व्यापार गतिविधियों में बड़ा शेयरधारक आधार है। कंपनी लगातार विस्तार कर रही है और रोजगार उत्पन्न कर रही है। कंपनी अपनी विस्तार और विविधीकरण योजना में विकासपुरी क्षेत्र में एक नया प्लांट स्थापित करने का निर्णय लेती है, जो एक अविकसित क्षेत्र है। नया प्लांट ऊर्जा दक्ष तकनीकी का उपयोग करने के लिए डिज़ाइन किया गया है, जिससे कंपनी को उत्पादन लागत में 20% की बचत होगी। कंपनी का निर्णय सरकार की नीति के साथ मेल खाता है, जो ऐसे अविकसित क्षेत्रों में निवेश आकर्षित करने की दिशा में है। सरकार ने भी उन कंपनियों के लिए पांच साल के लिए कर अवकाश की घोषणा की है, जो अविकसित क्षेत्रों में निवेश करती हैं। हालांकि, नया प्लांट विकासपुरी क्षेत्र के निवासियों के लिए परेशानी पैदा कर सकता है, जो अन्यथा शांतिपूर्ण है। नया प्लांट जीवन यापन की लागत में वृद्धि, बाहरी लोगों के प्रवास और सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था में विघटन ला सकता है। कंपनी ने संभावित विरोध को देखते हुए विकासपुरी क्षेत्र के लोगों और आम जनता को यह समझाने की कोशिश की कि उसकी कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी (CSR) नीति कैसे विकासपुरी क्षेत्र के निवासियों की संभावित कठिनाइयों को दूर करने में मदद करेगी। इसके बावजूद विरोध शुरू हो जाता है और कुछ निवासी न्यायपालिका से संपर्क करने का निर्णय लेते हैं क्योंकि उनका सरकारी अपील पर कोई सकारात्मक परिणाम नहीं निकला।

(a) इस मामले में क्या मुद्दे शामिल हैं?

(b) कंपनी के लक्ष्य को पूरा करने और निवासियों की चिंता को संबोधित करने के लिए क्या सुझाव दिए जा सकते हैं?

2. **सरस्वती संयुक्त राज्य अमेरिका** में एक सफल आईटी पेशेवर थी। देश के लिए कुछ करने की देशभक्ति की भावना से प्रेरित होकर वह भारत लौट आई। कुछ अन्य समान विचारधारा वाले मित्रों के साथ मिलकर, उन्होंने एक गरीब ग्रामीण समुदाय के लिए एक स्कूल बनाने के लिए एक एनजीओ का गठन किया। स्कूल का उद्देश्य नाममात्र लागत पर सर्वोत्तम गुणवत्ता वाली आधुनिक शिक्षा प्रदान करना था। उन्होंने जल्द ही पाया कि उन्हें कई सरकारी एजेंसियों से अनुमति लेनी होगी। नियम और प्रक्रियाएं काफी भ्रामक और बोझिल थीं। जो बात उन्हें सबसे ज्यादा निराश करती थी, वह थी देरी, अधिकारियों का उदासीन रवैया और स्थित की लगातार मांग। उनके अनुभव और उनके जैसे कई अन्य लोगों के अनुभव ने लोगों को सामाजिक सेवा परियोजनाएं लेने से हतोत्साहित किया है। स्वैच्छिक सामाजिक कार्य पर सरकारी नियंत्रण का एक उपाय आवश्यक है। लेकिन इसे जबरदस्ती और भ्रष्ट तरीके से नहीं किया जाना चाहिए। आप क्या उपाय सुझा सकते हैं ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि उचित नियंत्रण का प्रयोग किया जाए लेकिन नेक नीयत वाले, ईमानदार एनजीओ के प्रयासों को विफल न किया जाए ?

3. **एक ताढ़ा इंजीनियरिंग स्नातक** को एक प्रतिष्ठित रासायनिक उद्योग में नौकरी मिलती है। उसे काम पसंद है। वेतन भी अच्छा है। हालांकि, कुछ महीनों बाद वह गलती से पता चलता है कि एक अत्यधिक विषैला अपशिष्ट पास की एक नदी में गुप्त रूप से छोड़ा जा रहा है। इससे नदी के किनारे रहने वाले ग्रामीणों को स्वास्थ्य समस्याएं हो रही हैं जो अपनी पानी की जरूरतों के लिए नदी पर निर्भर हैं। वह परेशान है और अपनी चिंता का उल्लेख अपने उन सहकर्मियों से करती है जो कंपनी में लंबे समय से हैं। वे उसे चुप रहने की सलाह देते हैं क्योंकि जो कोई भी इस विषय का उल्लेख करता है उसे तुरंत बर्खास्त कर दिया जाता है। वह अपनी नौकरी खोने का जोखिम नहीं उठा सकती क्योंकि वह अपने परिवार की एकमात्र कमाने वाली है और उसे अपने बीमार माता-पिता और भाई-बहनों का समर्थन करना है। पहले तो वह सोचती है कि अगर उसके वरिष्ठ चुप रह रहे हैं, तो उसे क्यों अपनी गर्दन फंसाना चाहिए। लेकिन उसकी अंतरात्मा उसे नदी और उस पर निर्भर लोगों को बचाने के लिए कुछ करने के लिए प्रेरित करती है। दिल से उसे लगता है कि उसके दोस्तों द्वारा दी गई चुप्पी की सलाह सही नहीं है, हालांकि वह इसके कारण नहीं बता सकती। वह सोचती है कि आप एक बुद्धिमान व्यक्ति हैं और आपकी सलाह चाहती है।

(A) आप क्या तर्क दे सकते हैं जिससे उसे पता चले कि चुप रहना नैतिक रूप से सही नहीं है ?

(B) आप उसे क्या कार्रवाई अपनाने की सलाह देंगे और क्यों ?

4. **खनन, बांधों और अन्य बड़े पैमाने की परियोजनाओं** के लिए आवश्यक भूमि ज्यादातर आदिवासियों, पहाड़ी निवासियों और ग्रामीण समुदायों से अधिग्रहित की जाती है। विस्थापित व्यक्तियों को कानूनी प्रावधानों के अनुसार मौद्रिक मुआवजा दिया जाता है। हालांकि, भुगतान अक्सर देर से होता है। किसी भी मामले में, यह विस्थापित परिवारों को लंबे समय तक नहीं टिका सकता है। इन लोगों के पास कोई विपणन योग्य कौशल नहीं होता है जिससे वे किसी अन्य व्यवसाय में संलग्न हो सकें। वे अंततः कम वेतन वाले प्रवासी मजदूर बनकर रह जाते हैं। इसके अलावा, विकास उद्योगों, उद्योगपतियों और शहरी समुदायों के पास जाता है, जबकि लागत इन गरीब असहाय लोगों पर पड़ती है। लागत और लाभ का यह अन्यायपूर्ण वितरण अनैतिक है। मान लीजिए कि आपको ऐसे विस्थापित व्यक्तियों के लिए एक बेहतर मुआवजा-सह-पुनर्वास नीति का मसौदा तैयार करने का काम सौंपा गया है, तो आप समस्या से कैसे निपटेंगे और आपकी सुझाई गई नीति के मुख्य तत्व क्या होंगे?

5. **मान लीजिए कि आप वृद्ध और निराश्रित महिलाओं** को सहायता प्रदान करने के लिए एक सामाजिक सेवा योजना को लागू करने के प्रभारी अधिकारी हैं। एक वृद्ध और निरक्षर महिला योजना के लाभों का लाभ उठाने के लिए आपके पास आती है। हालांकि, उसके पास यह दिखाने के लिए कोई दस्तावेज नहीं है कि वह पात्रता मानदंडों को पूरा करती है। लेकिन उससे मिलने और उसकी बात सुनने के बाद आपको लगता है कि उसे निश्चित रूप से सहायता की जरूरत है। आपकी पृष्ठताछ से यह भी पता चलता है कि वह वास्तव में निराश्रित है और दयनीय स्थिति में रह रही है। आप दुविधा में हैं कि क्या करें। आवश्यक दस्तावेजों के बिना उसे योजना के तहत रखना स्पष्ट रूप से नियमों का उल्लंघन होगा। लेकिन उसे सहायता से वंचित करना क्रूर और अमानवीय होगा।

(A) क्या आप इस दुविधा को हल करने का कोई तर्कसंगत तरीका सोच सकते हैं?

(B) इसके लिए अपने कारण बताइए।

6. **आप एक सरकारी कार्यालय में एक युवा, महत्वाकांक्षी और ईमानदार कर्मचारी** हैं जो अपने विभाग के निदेशक के सहायक के रूप में काम कर रहे हैं। चूंकि आपने अभी-अभी ज्वाइन किया है, आपको सीखने और आगे बढ़ने की जरूरत है। सौभाग्य से आपके वरिष्ठ बहुत दयालु हैं और आपको आपके काम के लिए प्रशिक्षित करने के लिए तैयार हैं। वह एक बहुत ही बुद्धिमान और जानकार व्यक्ति हैं जिनके पास विभिन्न विभागों का ज्ञान है। संक्षेप में, आप अपने बॉस का सम्मान करते हैं और उनसे बहुत कुछ सीखने की उम्मीद कर रहे हैं। चूंकि आपकी बॉस के साथ अच्छी ट्यूनिंग है, इसलिए वह आप पर निर्भर रहने लगे हैं। एक दिन खराब स्वास्थ्य के कारण उन्होंने आपको कुछ जरूरी काम खत्म करने के लिए अपने घर बुलाया। आप उनके घर पहुंचे और



अध्याय - 1

निबंध लेखन: एक अवलोकन - विभिन्न प्रकार और शैलियाँ

यूपीएससी सिविल सेवा मुख्य परीक्षा में निबंध लेखन का एक प्रश्नपत्र होता है। यहाँ आपको दो निबंध लिखने के लिए कहा जाएगा, प्रत्येक 125 अंकों का, कुल 250 अंकों का। आपको चार-चार विषयों के दो सेट दिए जाएंगे, जिनमें से प्रत्येक खंड से एक का चयन करना होगा। यहाँ कोई निर्धारित पाठ्यक्रम नहीं है और विषय सामाजिक-आर्थिक प्रकृति का हो सकता है। यह सामान्य भी हो सकता है। दो निबंध (प्रत्येक लगभग 1200 शब्दों का) पूरा करने के लिए तीन घंटे के साथ, आपके पास इस पेपर में पर्याप्त समय है, जिससे यह यूपीएससी मुख्य परीक्षा में अपना स्कोर बढ़ाने के लिए एक अच्छा दांव बन जाता है। यह लेख 4 प्रकार के निबंधों, निबंधों की 2 अलग-अलग शैलियों और निबंध की कुछ अच्छी विशेषताओं के बारे में विवरण देता है।

निबंध के प्रकार

चार प्रकार के निबंध होते हैं जो नीचे सूचीबद्ध हैं:

- **वर्णनात्मक निबंध (Narrative Essay):** यहाँ लेखक किसी घटना या वृत्तांत का वर्णन करता है।
- **विवरणात्मक निबंध (Descriptive Essay):** यहाँ लेखक किसी घटना, प्रक्रिया या स्थिति का वर्णन करता है।
- **सूचनात्मक निबंध (Informative Essay):** यहाँ लेखक का उद्देश्य किसी विषय के नकारात्मक और सकारात्मक पक्षों सहित जानकारी प्रदान करना होता है।
- **प्रेरणादायक निबंध (Persuasive Essay):** यहाँ लेखक किसी विषय के बारे में पाठक को समझाने की कोशिश करता है।

मूल रूप से, निबंध के प्रश्नपत्र में, आमतौर पर उपरोक्त सभी प्रकारों के संयोजन की आवश्यकता होती है। लेखक के लक्ष्य निबंध के प्रकार को परिभाषित करते हैं।

निबंध की शैलियाँ

निबंध लेखन की दो शैलियाँ हैं, अर्थात्:

- **संरचित (Structured)**
- **सहज (Spontaneous)**

एक संरचित निबंध में, आप एक ढांचा बनाते हैं जिस पर आप निबंध लिखते हैं। एक सहज निबंध वह होता है जिसमें आप लिखते समय ही ढांचा बनाते हैं। हालाँकि, अपने विचारों को इकट्ठा करना और उन बिंदुओं को व्यवस्थित करना महत्वपूर्ण है जिन्हें आप पहले से कवर करेंगे। एक लेखक के रूप में, आपको यह पता लगाना होगा कि कौन

सी शैली आपको अधिक सूट करती है। यह मॉक टेस्ट में निबंधों का अभ्यास करके किया जा सकता है।

एक अच्छे निबंध की विशेषताएँ

1. स्पष्ट और संक्षिप्त।
2. पूरे निबंध में सुसंगत (coherence)।
3. सरल लेकिन अच्छी और सटीक भाषा में लिखा गया।
4. प्रासंगिक उद्धरण, उदाहरण और आँकड़े शामिल हैं।
5. अच्छी लिखावट में लिखा गया।
6. वर्तमान भारत के लिए प्रासंगिक।
7. बहुआयामी (multi-dimensional)।
8. तटस्थ और संतुलित।
9. समस्याओं के संभावित समाधान पेश करें।

यूपीएससी परीक्षा में निबंध कैसे लिखें -

निबंध प्रश्नपत्र यूपीएससी सिविल सेवा मुख्य परीक्षा के नौ प्रश्नपत्रों में से एक है। इस प्रश्नपत्र में, आपको दो निबंध लिखने होंगे, प्रत्येक में 1000 - 1200 शब्द। चार विषयों में से एक विषय का चयन किया जा सकता है। निबंध प्रश्नपत्र कुल 250 अंकों का होता है, जिसमें एक निबंध 125 अंकों का होता है।

- **विषयों को ध्यान से पढ़ें:** यह प्रक्रिया का सबसे महत्वपूर्ण कदम है। आपको चार विषयों में से एक का चयन करना चाहिए। अपना विषय चुनते समय, सुनिश्चित करें कि आप दिए गए विषयों में से उस विषय के बारे में सबसे अधिक जानते हैं। क्या नहीं चुनना चाहिए:
 - कोई संवेदनशील या विवादास्पद विषय, जैसे कि **नारीवाद (Feminism)**।
 - एक ऐसा विषय जिसके बारे में आप बहुत भावुक हैं या जिसके बारे में आप दृढ़ता से महसूस करते हैं। इस स्थिति में, आप उत्साहित हो सकते हैं और संतुलित निबंध लिखने में विफल हो सकते हैं। यह आपके खिलाफ काम कर सकता है।
- **कुछ समय के लिए सोचें:** एक बार जब आप अपना विषय चुन लेते हैं, तो आपको सीधे लिखना शुरू नहीं करना चाहिए। कुछ समय के लिए सोचना और अपने विचारों को इकट्ठा करना बुद्धिमानी है। पेंसिल से उन बिंदुओं को लिखें जिन्हें आप लिखना चाहते हैं। यह महत्वपूर्ण है क्योंकि तभी आप अपने बिंदुओं को सही क्रम में लिख सकते हैं। उदाहरण के लिए, यदि आप भारत के अपने पड़ोसियों के साथ संबंधों के बारे में लिख रहे हैं, तो आपको शुरुआत में ऐतिहासिक तथ्यों और घटनाओं को लिखना होगा। मान लीजिए कि आप निबंध लिखना शुरू करते हैं, और अंत की ओर ही महसूस करते हैं कि आप ऐतिहासिक भाग में एक महत्वपूर्ण विवरण का उल्लेख करना भूल गए हैं, जगह की कमी के कारण इसे जोड़ना बहुत देर हो जाएगी। इसलिए, यदि आप

शुरुआत में अपने रफ पॉइंट्स लिखते हैं तो यह मददगार होता है।

एक बार जब आपके हाथ में रफ पॉइंट्स आ जाएं, तो आप निबंध लिखना शुरू कर सकते हैं। लिखते समय, आपको एक अच्छी संरचना का पालन करना चाहिए। एक अच्छे निबंध की संरचना इस प्रकार है -

- परिचय (Introduction)
- ऐतिहासिक पृष्ठभूमि (Historical)
- मुख्य मुद्दा/समस्या/विषय (Main issue/problem/subject)
- वर्तमान परिदृश्य/विषय से संबंधित वर्तमान समाचार (Current scenario/current news related to the topic)
- सकारात्मक और नकारात्मक पहलू (Positive and negative aspects)
- बाधाएं (Obstacles)
- सुधार/आगे का रास्ता (Reforms/way forward)

यदि आप निम्नलिखित को भी शामिल करते हैं तो आपको अतिरिक्त अंक मिल सकते हैं:

- प्रसिद्ध व्यक्तियों द्वारा प्रासंगिक उद्धरण/कहावतें (शब्दशः उद्धृत करना सुनिश्चित करें - गलत उद्धरण आपको लापरवाह या आलसी दिखाते हैं)।
- प्रासंगिक सरकारी योजनाएं और नीतियां।
- कोई भी आंकड़े या संख्याएं (सटीक होनी चाहिए अन्यथा उन्हें शामिल न करें)।

लिखते समय ध्यान रखने योग्य महत्वपूर्ण बातें:

- नामकरण का सहारा न लें। अपने निबंध में कभी भी व्यक्तिगत न हों।
- अतिवादी विचार न रखें। बुद्ध का मध्यम मार्ग (Middle Path) यहाँ आपकी मदद कर सकता है।
- केवल समस्याएं ही न बताएं। संभावित सुधार/समाधान भी दें।
- सरकार/प्रशासन की अत्यधिक आलोचना न करें।
- भले ही विषय उत्तेजक (provocative) हो, आपका निबंध उत्तेजक नहीं होना चाहिए। एक संतुलित तस्वीर पेश करें। आपको विषय से सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- काल्पनिक (Utopian) समाधान लिखने से बचें।
- ध्यान रखें कि आप एक भविष्य के अधिकारी हैं, न कि पत्रकार!

यूपीएससी मेन्स में निबंध प्रश्नपत्र कैसे लिखें?

निबंध प्रश्नपत्र (Essay Paper) यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षाओं का एक महत्वपूर्ण पहलू है। यह आपके परिणाम को बना या बिगाड़ सकता है। इस प्रश्नपत्र में दो खंड होते हैं। प्रत्येक खंड आपको चार विषय देता है जिनमें से आपको

प्रत्येक में से एक विषय चुनना होता है। आपके द्वारा लिखे गए प्रत्येक निबंध को 125 में से अंक दिए जाते हैं, जिससे कुल 250 अंक होते हैं।

जबकि आपको सिविल सेवा निबंध प्रश्नपत्र के लिए अलग से सामग्री का अध्ययन नहीं करना पड़ता है, क्योंकि आपकी सामान्य अध्ययन की तैयारी संभावित विषयों को कवर करने के लिए पर्याप्त है, आपको एक अच्छा निबंध लिखने के कुछ पहलुओं को याद रखना होगा यदि आप अपने साथी यूपीएससी उम्मीदवारों पर बढ़त हासिल करना चाहते हैं। बहुत से आईएएस उम्मीदवार निबंध प्रश्नपत्र पर ध्यान केंद्रित नहीं करने की गलती करते हैं क्योंकि इसकी सामान्य प्रकृति होती है। हालांकि, इस पेपर पर ध्यान केंद्रित करने के कई फायदे हैं जैसे कि -

- आपके पास चार में से एक विषय चुनने का विकल्प होता है। आपको इसका लाभ उठाने और इस पेपर में चमकने में सक्षम होना चाहिए।
- निबंध प्रश्नपत्र एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ आप विषयों के बारे में अपने ज्ञान का प्रदर्शन (subject knowledge) करते हुए अपनी रचनात्मकता को उजागर कर सकते हैं।
- इसके अलावा, आपके पास प्रति विषय लगभग 1000 से 1200 शब्द लिखने के लिए तीन घंटे होते हैं (यूपीएससी परीक्षा में निबंध की शब्द सीमा)। इसलिए, आप निबंध के विषय के साथ न्याय कर सकते हैं क्योंकि आपके पास अपने विचारों को व्यवस्थित करने और फिर लिखना शुरू करने के लिए पर्याप्त समय होता है।

आईए देखें कि आपका निबंध कैसा संरचित होना चाहिए!

आपके निबंध में आदर्श रूप से एक परिचय, सामग्री, मूल विषय और निष्कर्ष होना चाहिए। परिचय और निष्कर्ष स्वतः स्पष्ट हैं। सामग्री को आपके विषय का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य देना चाहिए। इसमें आपके विषय से संबंधित तथ्य और घटनाएं भी शामिल होनी चाहिए। विषय के प्रासंगिक पहलुओं को कवर करने का प्रयास करें। मूल विषय को विषय पर आपके विचारों के बारे में बात करनी चाहिए। एक स्टैंड लें लेकिन संतुलित स्टैंड लें। आपको चुने हुए विषय के नकारात्मक और सकारात्मक पहलुओं का भी वर्णन करना चाहिए।

यूपीएससी निबंध विषय का चयन कैसे करें?

- दिए गए सभी विषयों को अच्छी तरह से पढ़ें।
- एक ऐसा विषय चुनें जिसके बारे में आप सबसे अधिक जानते हों और जिसके बारे में आपके पास महत्वपूर्ण ज्ञान हो।
- ऐसे उत्तेजक मुद्दों से बचने की कोशिश करें जहाँ व्यक्तिगत राय विवादास्पद हो सकती है।
- विषय का अर्थ सुनिश्चित होने पर ही उसका चयन करें। उदाहरण के लिए, जानें कि किसी दिए गए मामले में आईटी

का क्या अर्थ है - सूचना प्रौद्योगिकी (Information Technology) या आयकर (Income Tax)।

- किसी विषय को इसलिए न चुनें क्योंकि वह आपको उत्साहित करता है। आपके पास उसके बारे में लिखते समय सामग्री और एक संतुलित दृष्टिकोण होना चाहिए।

एक अच्छे निबंध की विशेषताएँ

- यह दिए गए विषय के अनुरूप होना चाहिए। केवल शब्द संख्या भरने के लिए विषय से न भटके।
- यह पाठक को बांधे रखना चाहिए। एक अच्छा निबंध पाठक की जिज्ञासा को विषय के बारे में जगाना चाहिए। यह उबाऊ नहीं होना चाहिए। पाठक को ऐसा महसूस होना चाहिए कि वह इसे पढ़ता ही जाए।
- यह बहुआयामी (Multi-Dimensional) होना चाहिए। एक ही दृष्टिकोण न रखें। विभिन्न दृष्टिकोणों से विषय का विश्लेषण करें। आप विषय में नई अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकते हैं और परीक्षक को प्रभावित कर सकते हैं।

अच्छे निबंध की विशेषताएँ

- सरल लेकिन प्रभावी और तार्किक होना चाहिए - आपको अत्यधिक जटिल अंग्रेज़ी (Queen's English) लिखने की ज़रूरत नहीं है, लेकिन भाषा इतनी स्पष्ट होनी चाहिए कि आपके विचार सही ढंग से प्रस्तुत हो सकें।
- व्याकरण की दृष्टि से शुद्ध होना चाहिए- यह न केवल निबंध की स्पष्टता बढ़ाता है बल्कि परीक्षक पर सकारात्मक प्रभाव भी डालता है।
- साफ-सुथरा और सुव्यवस्थित हो - लिखने से पहले अपने विचारों को व्यवस्थित कर लें। निबंध का क्रम पहले से अपने दिमाग में स्पष्ट करें ताकि बार-बार काटने-छाँटने (scratching) से बचा जा सके।
- निरंतरता (continuity) होनी चाहिए - एक बिंदु से दूसरे बिंदु पर जाने का क्रम स्वाभाविक और सहज हो।
- अचानक विषय न बदलें, बल्कि विषयांतर (transition) को सुचारु रूप से करें। यह परीक्षक को यह दर्शाता है कि आपके विचार स्पष्ट और संगठित हैं।
- ज़रूरत के अनुसार उद्धरण, शीर्षक, उप-शीर्षक और चित्र/रेखाचित्र (diagrams) शामिल करें।
- सही संरचना (structure) होनी चाहिए।
- यूपीएससी निबंध पेपर में इन गलतियों से बचें:
- पहली व्यक्ति (First Person) में न लिखें - "मैं सोचता हूँ..." या "मेरे अनुसार..." जैसे वाक्यों से बचें।
- अत्यधिक आक्रामक भाषा न अपनाएँ - एक सिविल सेवक को संयमित और संतुलित दृष्टिकोण वाला होना चाहिए।
- आक्रामक लेखन अडियल स्वभाव (inflexibility) को दर्शा सकता है।

- नकारात्मक (pessimistic) निबंध न लिखें -
- यूपीएससी ऐसे अधिकारी चाहता है जो आशावादी और सकारात्मक सोच रखते हों, समस्याओं के समाधान भी प्रस्तुत करें।
- बिंदुवार (bullet points) में न लिखें - याद रखें कि आप एक निबंध लिख रहे हैं, उत्तर पत्र नहीं।
- प्रश्न में दिए गए दृष्टिकोण से सहमत होना आवश्यक नहीं है - कभी-कभी प्रश्न एक विशेष दृष्टिकोण प्रस्तुत कर सकता है, आप उसके सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पक्षों का विश्लेषण कर सकते हैं।
- विषय से भटकाव न हो - केवल शब्द सीमा पूरी करने के लिए अप्रासंगिक बातें न लिखें।
- राजनीतिक पक्षपात न दिखाएँ - किसी राजनेता या राजनीतिक दल का अनावश्यक उल्लेख न करें।
- आप भविष्य के प्रशासक (bureaucrat) बनने जा रहे हैं, पत्रकार या राजनीतिज्ञ नहीं।
- अविश्वसनीय उद्धरण न दें - जिस उद्धरण (quote) की सटीकता पर संदेह हो, उसे न लिखें, गलत व्यक्ति को उद्धरण न दें।
- खुद से उद्धरण न बनाएँ। परीक्षक को धोखा देना असंभव है और ऐसा करने से आपको नकारात्मक अंक मिल सकते हैं।
- यदि आप नियमित रूप से अच्छे यूपीएससी निबंध पढ़ने की आदत विकसित करते हैं तो आप अच्छे निबंध लिख सकते हैं। निबंध पढ़ने को अपनी यूपीएससी सिविल सेवा तैयारी का हिस्सा बनाएं। यह भी ध्यान रखें कि यूपीएससी पिछले वर्ष के निबंध पत्रों (Previous Year Papers) का उल्लेख करने से बहुत मदद मिलेगी। याद रखें, अभ्यास ही सफलता की कुंजी है।

निबंध लेखन के लिए महत्वपूर्ण संकेत

निबंध प्रश्नपत्र यूपीएससी मुख्य (लिखित) परीक्षा के नौ प्रश्नपत्रों में से एक है। इसका वेटेज 250 अंक है, जो अंतिम गणना के लिए गिने जाते हैं। पहले, यह केवल 200 अंक का होता था। निबंध प्रश्नपत्र के लिए कोई विशेष पाठ्यक्रम नहीं है, और निबंध के विषय कहीं से भी, विशेषकर समसामयिक घटनाओं से आ सकते हैं। भले ही यह आसान लगे, इस पेपर की तैयारी करना आवश्यक है क्योंकि अंक आपकी रैंकिंग के लिए गिने जाते हैं। अपनी सामान्य जागरूकता और आलोचनात्मक सोच क्षमताओं को बढ़ाना भी महत्वपूर्ण है।

निबंध अनिवार्य रूप से अच्छी तरह से नियोजित और व्यवस्थित लेखन का एक टुकड़ा है। अब, न केवल निबंध प्रश्नपत्र के लिए, इस प्रकार का रचनात्मक लेखन सभी मुख्य पत्रों के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यूपीएससी मांग करता है कि सभी उत्तर इसी प्रारूप में हों। यह पेपर उन उम्मीदवारों के लिए वरदान साबित हो सकता है जो सार्थक

महात्मा गांधी (Mahatma Gandhi)	• "आंख के बदले आंख पूरी दुनिया को अंधा बना देगी।" • "हमेशा विचार, शब्द और कर्म की पूर्ण सामंजस्यता का लक्ष्य रखो। अपने विचारों को शुद्ध बनाने की दिशा में काम करो और सब कुछ ठीक हो जाएगा।" • "गहरी आस्था से कहा गया 'नहीं' उस 'हाँ' से बेहतर है जो सिर्फ दूसरों को खुश करने या परेशानी से बचने के लिए कहा जाए।" • "खुद वह बदलाव बनो जो तुम दुनिया में देखना चाहते हो।" • "पृथ्वी हर व्यक्ति की जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त संसाधन देती है, लेकिन हर व्यक्ति के लालच के लिए नहीं।" • "ऐसे जियो जैसे कि तुम्हें कल मरना हो, और ऐसे सीखो जैसे कि तुम सदा जीवित रहने वाले हो।" • "पहले वे तुम्हें अनदेखा करेंगे, फिर वे तुम पर हंसेंगे, फिर वे तुमसे लड़ेंगे, और फिर तुम जीतोगे।" • "ईश्वर का कोई धर्म नहीं है।" • "खुशी तब होती है जब तुम्हारे विचार, शब्द और कर्म में सामंजस्य होता है।" • "जो कुछ भी करो, प्रेम से करो या फिर उसे बिल्कुल मत करो।" • "कोमल तरीके से भी तुम दुनिया को हिला सकते हो।" • "मेरा जीवन ही मेरा संदेश है।" • "गरीबी हिंसा का सबसे बुरा रूप है।" • "सात घातक पाप: बिना परिश्रम का धन; बिना विवेक का आनंद; बिना मानवता का विज्ञान; बिना चरित्र का ज्ञान; बिना सिद्धांत की राजनीति; बिना नैतिकता का व्यापार; बिना त्याग की उपासना।" • "शक्ति शारीरिक क्षमता से नहीं आती, यह अदम्य इच्छाशक्ति से आती है।" • "भविष्य इस पर निर्भर करता है कि तुम आज क्या करते हो।" • "किसी चीज़ में विश्वास करना और उसे न जीना, बेईमानी है।" • "दुनिया में कुछ लोग इतने भूखे हैं कि उनके लिए भगवान केवल रोटी के रूप में ही प्रकट हो सकते हैं।" • "सबसे सरल दयालुता के कार्य हजारों प्रार्थनाओं से अधिक शक्तिशाली होते हैं।" • "मेरे लिए, एक मेमने का जीवन किसी भी मानव जीवन से कम मूल्यवान नहीं है।" • "हम जो करते हैं और जो करने में सक्षम हैं, उसके बीच का अंतर ही दुनिया की अधिकतर समस्याओं को हल करने के लिए पर्याप्त होगा।" • "तुम्हारे विश्वास तुम्हारे विचार बनते हैं; तुम्हारे विचार तुम्हारे शब्द बनते हैं; तुम्हारे शब्द तुम्हारे कर्म बनते हैं; तुम्हारे कर्म तुम्हारी आदतें बनते हैं; तुम्हारी आदतें तुम्हारे मूल्य बनते हैं; और तुम्हारे मूल्य तुम्हारी नियति बनते हैं।" "तुम्हें मानवता पर विश्वास नहीं खोना चाहिए। मानवता एक महासागर के समान है; अगर उसमें कुछ बूढ़ें गंदी हैं, तो पूरा महासागर गंदा नहीं हो जाता।" • "तुम मुझे कैद कर सकते हो, मुझ पर अत्याचार कर सकते हो, मेरा शरीर नष्ट कर सकते हो, लेकिन तुम मेरे मन को कभी कैद नहीं कर सकते।" • "मनुष्य अपने विचारों का उत्पाद है। जो वह सोचता है, वही बन जाता है।" • "किसी भी कार्य को करने से पहले, रुको और सबसे गरीब, सबसे असहाय व्यक्ति का चेहरा याद करो, जिसे तुमने देखा हो, और अपने आप से पूछो—जो मैं करने जा रहा हूँ, क्या वह उसके लिए मददगार होगा?"
मार्टिन लूथर किंग (Martin Luther King)	• "एक अधिकार में देरी करना, उस अधिकार को नकारने के समान है।" • "जो व्यक्ति किसी चीज़ के लिए मरने को तैयार नहीं है, वह जीने के योग्य नहीं है।" • "अंधकार को अंधकार से दूर नहीं किया जा सकता, केवल प्रकाश ही ऐसा कर सकता है। घृणा को घृणा से नहीं मिटाया जा सकता, केवल प्रेम ही ऐसा कर सकता है।" • "दान्ते ने कहा कि नर्क का सबसे गर्म स्थान उन लोगों के लिए आरक्षित है जो नैतिक संकट के समय तटस्थ रहते हैं।" • "आस्था वह पहला कदम उठाना है, भले ही पूरी सीढ़ी न दिखे।"

Dear Aspirants, here are the our results in differents exams

(Proof Video Link) ↓

RAS PRE. 2021 - <https://shorturl.at/qBJ18> (74 प्रश्न , 150 में से)

RAS Pre 2023 - <https://shorturl.at/tGHRT> (96 प्रश्न , 150 में से)

UP Police Constable 2024 - <http://surl.li/rbfyn> (98 प्रश्न , 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - <https://youtu.be/gPqDNlc6UR0>

Rajasthan CET 12th Level - <https://youtu.be/oCa-CoTFu4A>

RPSC EO / RO - <https://youtu.be/b9PKjl4nSxE>

VDO PRE. - <https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856Wl8&t=202s>

Patwari - <https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s>

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - <https://youtu.be/2gz2fJyt6vI>

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
MPPSC Prelims 2023	17 दिसम्बर	63 प्रश्न (100 में से)
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये

whatsapp <https://wa.link/6bx90g> 1 web.- <https://shorturl.at/5gSVX>

RAS Pre. 2023	01 अक्टूबर 2023	96 प्रश्न (150 में से)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2 nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2 nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1 st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2 nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2 nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1 st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21 नवम्बर 2021 (1 st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1 st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1 st शिफ्ट)	98 (150 में से)
UP Police Constable	17 February 2024 (1 st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

whatsapp <https://wa.link/6bx90g> 2 web.- <https://shorturl.at/5gSVX>